भारत के सी.एस.ओ. में पर्यावरण को मुख्यधारा का विषय बनाना

VANI
Celebrating 30 Years
VOICE OF THE VOLUNTARY SECTOR

im
INDIVIDUELL MÄNNISKOHJÄLP
SWEDISH DEVELOPMENT PARTNER

भारत के सी.एस.ओ. में पर्यावरण को मुख्यधारा का विषय बनाना

लेखकः वॉलंटरी एक्शन नेटवर्क इंडिया (वाणी)

सितंबर 2022

कॉपीराइट (सी) वॉलंटरी एक्शन नेटवर्क इंडिया
इस पुस्तक की सामग्री को प्रकाशक की उचित स्वीकृति के साथ पूर्ण या आंशिक रूप से पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रकाशनः
वॉलंटरी एक्शन नेटवर्क इंडिया (वाणी) वाणी हाउस, 7,
पीएसपी पॉकेट, सेक्टर –8, द्वारका, नई दिल्ली 110 077
फोनः 91– 11– 49148610, 40391661, 40391663
ई–मेलः info@vaniindia.org
वेबसाइटः www.vaniindia.org

@TeamVANI

@vani_info

@VANI India

@VANI Perspective

विषय–सूची

प्रस्तावना 1

अध्याय 1
पर्यावरण को मुख्यधारा में लाने का अर्थ क्या है? 1

अध्याय 2
पर्यावरण आपातकाल और सतत विकास की
ओर बढ़ते कदमः भारत के सिद्धांत और व्यवहार
में अंतर पर एक अंतर्दृष्टि 6

अध्याय 3
भारतीय सीएसओस में पर्यावरण की मुख्यधारा
पर वाणी का प्रारंभिक अध्ययन 13

अध्याय 4
क्यों नागरिक समाज संगठनों द्वारा
पर्यावरण को कारक और कारण दोनों के
रूप में आंकना चाहिए? 17

सिफारिश 23

प्रस्तावना

जिस हवा में हम साँस लेते हैं, जो पानी हम पीते हैं, और जो खाना हम खाते हैं, इन सब का दाता एक ही है– हमारा पर्यावरण। 21वी सदी की भाग–दौड़ भरी जिंदगी में, स्वार्थ और वित्तीय एवं आर्थिक भोगो के लिए शोषण करना, व्यक्तिगत जीवन के मूल्य बन गए हैं; और जिस पर्यावरण का हम हनन कर रहे हैं उस पर ध्यान नहीं देते। फिर भी, धरती के पर्यावरण में बदलाव के साथ ही, सारी दुनिया एक ऐसे जल–वायु आपातकाल से गुजर रही है जो मानव गतिविधियों की देन है। ग्रीन हाउस उत्सर्जन के वातावरण में रिसने से, ग्रीष्म लहरों और उनके बाद में दिखने वाले परिणामों से समूचे संसार में विनाशकारी नुकसान हो रहा है। इस अनियमित ढंग से हुए जलवायु परिवर्तन से न केवल मानव जीवन बाधित हो रहा है बल्कि उनका आर्थिक व सामाजिक क्षेम पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है। अपने पारिस्थितिक तंत्रों की अंतर्संयोजनात्मकता को और हमारे व इसके बीच के अमूर्त बंधन देखते हुए, इतना तो तय है की हम आज जो निर्णय लेते हैं उनसे यह निर्धारित होगा की हमारी आने वाली पीढ़ियों का जीवन कैसा होता है।

इसे तत्काल प्रभाव से ठीक करने की जरूरत को भांपते हुए, यह अतिआवश्यक हो गया है की नागरिक समाज संस्थाओं पर्यावरण के मुद्दे को मुख्यधारा की वार्ता में लाए। क्योंकि सी.एस.ओ. का मुख्य लक्ष्य अपने लक्षित समूह की भलाई के लिए कार्य करना होता है, इसीलिए यह दस्तावेज एक ऐसी सूचनात्मक शोध का कार्य करता है जो नागरिक समाज संस्थाओं को पर्यावरण को मुख्यधारा में लाने के लिए न केवल शिक्षित करता है बल्कि प्रोत्साहित भी करता है, जिससे की वे अपनी बाध्यताओं को और अच्छे से समझ सकें और ऐसे अनुकूलनीय समाधान बना सकें जिनसे सामाजिक बदलाव और विकास में सहायता होगी। इन संस्थाओं की पर्यावरण को मुख्यधारा में लाने में सहायता करने के लिए, इस दस्तावेज में कुछ ऐसे सुझाव हैं जो की कोई भी संस्था अपनी परिस्थितियों के अनुसार अपना सकती है।

सिविल क्षेत्र की आवाज के रूप में 'वाणी' पर्यावरण जैसे सामान्य क्षेत्रीय मुद्दों पर अभिसरण लाती है, और किसी संस्था का ध्यान पर्यावरण को मुख्यधारा में लाने के मुद्दे की तरफ केंद्रित करती है। जब 'वाणी' की समझ में आया की पर्यावरण की समस्या से उन समुदायों पर कितना विनाशकारी प्रभाव पड़ता है जिनके साथ सी.एस.ओ. काम करते हैं, तब 'वाणी' ने संपोषणीय जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर कार्रवाई करने की तत्परता को भी भांपा। अंततः, हमारे व्यक्तिगत प्रयासों के जोड़ से ही सहयोगात्मक प्रयास बनते हैं जिनसे हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए न केवल एक टिकाऊ भविष्य बनेगा बल्कि सब के लिए एक स्वस्थ व सुरक्षित संसार का भी निर्माण होगा। धरती पर जीवन कायम रखने के लिए सामूहिक प्रयास करना और संस्थागत स्तर पर इस मुद्दे को संबोधित करना अब एक विकल्प मात्र न होकर एक आवष्यकता बन चुकी है।

इस परियोजना के प्रयोजन के लिए मैं आई.एम. स्वीडिश डेवेलपेमेंट पार्टनर का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, और इस दस्तावेज का मसौदा तैयार करने और इसे संपादित करने के लिए संचार इंटर्न सुश्री समीक्षा गोसाईं का भी आभार व्यक्त करता हूँ।

हर्ष जेटली
मुख्य कार्यकारी

अध्याय 1
पर्यावरण को मुख्यधारा में लाने का अर्थ क्या है?

सितंबर 2022 की शुरुआत में, अमरीका के पश्चिमी क्षेत्र में एक झुलसा देने वाली ग्रीष्म लहर आई जिसमें अब तक के सर्वाधिक तापमान रेकॉर्ड किए गए। इससे जंगलों में ऐसी भीषण आग लगी जो पूर्वी प्रशांत महासागर के समुद्री तूफान से ही शांत हो पाई। इससे न केवल 6 करोड़ 10 लाख लोगों[1] के लिए अत्यधिक गर्मी के परामर्श जारी करने पड़े, बल्कि गर्मी के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों में बढ़ोतरी हुई तापमान में अत्यधिक वृद्धि से, जो की 100 फारेनहाइट के ऊपर जा चुके थे। ब्रायन काह्न, जो की नासा की जेट प्रणोदन प्रयोगशाला में एक वायुमंडलीय वैज्ञानिक हैं, ने कहा, "यदि आप किसी भी महीने में– किसी भी वर्ष में– रेकॉर्ड किए गए सर्वाधिक तापमानों का परिमाण देखें, तो आपको पता चलेगा की यह ग्रीष्म लहर सचमुच अद्वितीय है"। दक्षिणी कैलिफोर्निया की ग्रीष्म लहरों का अध्ययन करने के बाद, इसी थीसिस को आगे बढ़ाते हुए, जलवायु वैज्ञानिक ग्लिन हूली ने बताया की अमरीका में पिछले चार दशकों में आई सभी ग्रीष्म लहरों में से 2022 की ग्रीष्म लहर सबसे खराब थी। साथ ही, यूनाइटेड किंगडम में आधे से ज्यादा मौसम के स्टेशनों ने आज तक का सबसे गर्म दिन जुलाई 2022 में आई ग्रीष्म लहर में रेकॉर्ड था। गर्मी के मौसम में जब तापमान अत्यधिक बढ़ रहा था, तब जून व अगस्त 2022 के बीच आए पाँच ग्रीष्म कालों में 3271 मौतें हुईं[2] (जो की इंग्लैंड और वेल्स में हुई कुल मौतों के पाँच–वर्ष के औसत से 6.2% अधिक है)। यू.के. के लिए मेट कार्यालय के ऋतु पूर्वानुमान के अनुसार, तापमान पहली बार 104 फारेनहाइट के ऊपर गया, जो की उनके अनुसार इंसानों द्वारा किए गए जलवायु परिवर्तन के बिना होना लगभग असंभव है। 2022 की गर्मी का तापमान उप–महाद्वीप में आज तक का सर्वाधिक तापमान था, ग्रीष्म लहरों और लंबे अकाल के कारण न केवल यू.के. की, बल्कि पुर्तगाल व फ्रांस जैसे देशों की भी कार्यप्रणाली को नुकसान पहुँचा, जिससे हजारों लोगों को अपने घरों को खाली करना पड़ा। इस वर्ष, केवल ग्रीष्म लहरों ने ही नहीं, बाढ़ ने भी भारी तबाही मचाई। पाकिस्तान की बात करें तो, मूसलाधार वर्षा के कारण वहाँ पर अब तक की सबसे उग्र बाढ़ आई। संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों के अनुसार, सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में बाढ़ का पानी उतरने में छह महीने तक लग सकते हैं।

इस बाढ़ का प्रभाव पाकिस्तान के चारों प्रांतों पर और लगभग 15% आबादी पर पड़ा। पाकिस्तान के प्रधान मंत्री शाहबाज शरीफ के अनुसार, "पाकिस्तान ने भूमंडलीय तपन की इससे कठोर और विनाशकारी मार कभी नहीं खाई..." और उन्होंने दावा किया की इस आपदा में पाकिस्तान का कोई हाथ नहीं है। इस बाढ़ और अत्यधिक वर्षा के कारण न केवल आजीविका प्रभावित हुई और लोगों की जानें गई, बल्कि इससे मोहन जोदड़ो, जो की यूनेस्को का एक विश्व विरासत स्थल है, उसे भी क्षति पहुंची।

1 https://earthobservatory.nasa.gov/images/150318/a-long-lasting-western-heatwave पर जानकारी उपलब्ध है

2 https://www.bbc.com/news/health-63171417 पर जानकारी उपलब्ध है

जिस अभूतपूर्व गति से जलवायु संबंधित आपदाएं दुनिया भर के देशों को प्रभावित कर रही हैं, हम हर वर्ष कोई न कोई ऐसा रेकॉर्ड दर्ज कर रहे हैं जो मानव–रचित जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न हो रहे हैं। यह हमें सोचने के लिए विवश कर देता है कि हमारे स्वार्थ और अनभिज्ञता से किए गए दुष्कर्म मानवता को किस ओर ले जा रहे हैं। प्रकृति हमें भरपूर चीजें देती है, और वर्तमान में सक्रिय रूप से कार्य करके और धरती का ध्यान रख कर हम अपनी आने वाली पीढ़ी को एक स्वस्थ भविष्य का उपहार दे सकते हैं। अगर हम 'वर्तमान' की जिम्मेदारी नहीं लेते, तो हमारी आने वाली पीढ़ी को निश्चित रूप से जलवायु आपदाओं का प्रकोप झेलना पड़ेगा।

हम, यानी वर्तमान पीढ़ी पर, समृद्ध प्राकृतिक संपदा को अगली पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखने का उत्तरदायित्व है। यह समस्या मात्र जलवायु परिवर्तन तक सीमित नहीं हैय यह जलवायु न्याय की भी बात है।"

श्री नरेंद्र मोदी, भारत के प्रधान मंत्री[3]

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा परिकल्पित 2024–25 का भारत, जो की एक 5 लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था और एक वैश्विक शक्ति बनेगा, वही भारत 2022 के पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक[4] में कुल स्कोर 18.90 के साथ आखिरी स्थान पर था (180वा)। इसका निर्माण 2022 में वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम, येल सेंटर फॉर एनवायरमेंटल लॉ एण्ड पॉलिसी एवं कोलम्बिया यूनिवर्सिटी द्वारा बनाया गया था, और यह सूचकांक पर्यावरण की वहनीयता का अनुमान लगाता है। संयुक्त राष्ट्र विकास प्रोग्राम (यू.एन.डी.पी.) के 2030 के एजेंडा के अनुसार यह सूचकांक विभिन्न देशों में वहनीयता की स्थिति को मापता है और रैंक देता है। यह 11 श्रेणियों में 40 संकेतकों का प्रयोग करके 180 देशों को उनके पर्यावरण के स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन, और पारिस्थितिक तंत्र की जीवन शक्ति के अनुसार रैंक देता है, जिससे की यह दर्शाया जा सके की वे देश अपनी पर्यावरण नीति के लक्ष्यों के कितने निकट हैं। यह न केवल एक रिपोर्ट कार्ड का काम करता है, बल्कि ये देशों को एक टिकाऊ भविष्य के लिए बेहतर काम करने का मार्गदर्शन भी देता है। इस सूचकांक में किसी देश का स्थान यह दर्शाता है की वे अपनी पर्यावरणीय समस्याओं का कितने प्रभावी रूप से सामना कर रहे हैं, उदाहरण के लिए, 2022 के सूचकांक[5] में डेनमार्क 77.90 अंकों के साथ शीर्ष स्थान वन है क्योंकि इनके सार्वजनिक स्वास्थ्य को बचाने, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने, और ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को घटाने के प्रयास बहुत सफल रहे हैं। दूसरी तरफ, भारत और म्यांमार जैसे देश जो की सबसे निचले स्थानों पर है, जिससे यह ज्ञात होता है की चुनौतियों के स्पेक्ट्रम का सामना करने के उनके प्रयासों में कमियाँ हैं। नेपाल जैसे देश, जिनमें अशान्ति है और जो सीमाओं पर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं वे कम अंक प्राप्त करने का दोष कमजोर शासन को दे सकते हैं, भारत का 18.9 का स्कोर यह दर्शाता है की इसके मूल्यांकन और नीति नियोजन में कुछ खामियाँ हैं। भारत की रैंक से इसके सिद्धांत और व्यवहार के बीच का अंतर स्पष्ट होता हैय जो वायदा यह वैश्विक और कूटनीतिक स्तर पर करता है, उसे यह समस्या के अच्छे मूल्यांकन की कमी और अपर्याप्त समाधानों के कारण पूरा नहीं कर पाता। इससे एक ऐसे देश में पर्यावरण की स्थिति का अंदाजा लगता है जो एक विकासशील देश है लेकिन आर्थिक रूप से सबसे मजबूत बनने की राह पर है।

2005 के बाद से भारत में होने वाली भीषण जलवायु घटनाओं की आवृत्ति एवं तीव्रता में 200 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिषद की 2021 की रिपोर्ट[6]

---

3 प्रधान मंत्री मोदी के संवाद, वैश्विक हिन्दू बोद्ध पहल पर दिए गए भाषण का एक अंश। https://youtu.be/LwzoTIAj4PM पर उपलब्ध है।

4 वॉल्फ, एम.जे., इमर्सन, जे.डब्ल्यू., एस्टी, डी.सी., डे शेरबीनीं, ए. वेंडलिंग, जेड. ए. et al (2022)। 2022 पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक। न्यू हेवन, सीटीः येल सेंटर फॉर एनवायरमेंटल लॉ एण्ड पॉलिसी।

5 यू.एन. जनरल असेंबली, हमारी दुनिया को बदलनाः सतत बदलाव के लिए 2030 का अजेंडा, 21 ऑक्टोबर 2015, https://www.refworld.org/docid/57b6e3e44.html] पर उपलब्ध है,

6 मोहंटी, अविनाश, और श्रेय वाधवा। 2021। भारत की जलवायु आलोचनीयता – एक जिला स्तरीय आकलन। नई दिल्लीः ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिषद।

यह शाश्वत सत्य है की एक देश वैसा ही होता है जैसा उसके लोग उसे बनाते हैं इसीलिए उनपर भी ध्यान देना आवश्यक है। भारत की 130 करोड़ की आबादी (वर्ष 2021 में विश्व की दूसरी सबसे अधिक आबादी) में से 80 करोड़ लोगों को गरीब कहा गया है। गरीबी और कोविड–19 महामारी से ग्रस्त देश में उन लोगों की जीवनशैली पर प्रश्न उठते हैं जो पिछड़े हुए हैं। उन लोगों की कौन मदद करता है जो गरीबी से ग्रस्त तो है ही, पर प्राकृतिक आपदाओं के बोझ तले भी दबे हैं? इसके साथ ही, महामारी का असर उन घरों पर अभी भी है जिन्होंने न केवल अपने प्रियजनों को खोया, बल्कि जीवित रहने के साधनों, बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं और शालीन जीवन के अधिकार को भी। गरीबी की जड़ें फैलती रही, और माना जाता है की महामारी के बाद लगभग 15 से 19.9 करोड़ और लोग गरीबी की कगार पर आ गए। महामारी से पर्यावरण के दो पहलू सामने आए (भौतिक पर्यावरण और सामाजिक वातावरण दोनों), एक वह जिससे हमे ताजी हवाएं और साफ आसमान मिले और दूसरा वह जो जिसके कारण एक मनुष्य असहाय हो जाता है और उसकी बुनियादी आवश्यकताएं जैसे स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और सुरक्षा पूरी नहीं हो पाती।

ऐसी परिस्थितियों से मालूम पड़ता है की सरकार व अन्य संस्थाएं मानव और प्रकृति के सहजीवी रिश्ते को समझने में विफल रही हैं। इससे ऐसी बाधा उत्पन्न होती है जिसके परिणाम घातक होते हैं। इस संदर्भ में, पर्यावरण के हिस्से हैंः प्राकृतिक पर्यावरण (हवा, धरती, मिट्टी, पानी), वे संसाधन जो इसमें पनपते हैं (वनस्पति, जीव और खनिज) और इनसे जुड़ी संस्कृतियाँ और परम्पराएं। जीवित रहने और वृद्धि के लिए गरीब लोग उनके आस–पास के प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। इन संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन का दुष्प्रभाव पड़ता है, जिससे की उनका जीवन संकट में आ जाता है। पिछड़े हुए लोगों पर प्राकृतिक आपदाओं का रोष अधिक पड़ सकता है जिससे की वे और गरीब हो सकते हैं। जैसे की, 12 अक्टूबर 2014 को, आंध्र प्रदेश के विशाखापटनम में आधुनिक इतिहास का सबसे भयंकर चक्रवाती तूफान आया, जिसका नाम था हुदहुद। इस चक्रवात से बहुत नुकसान हुआ, इससे 61 जानें गई और लगभग ₹29,900 करोड़ का नुकसान हुआ। यही नहीं, स्थानीय अधिकारियों ने अनुमान लगाया की लगभग 70% पेड़ जड़ समेत उखड़ गए थे, कच्चे घरों को भारी नुकसान पहुँचा था, आवाजाही की प्रणाली बाधित हुई थी और दूरसंचार सेवाओं को भी नुकसान पहुँचा था। इस आपदा के पश्चात बुनियादी रूप से आवश्यक वस्तुओं की कीमतें बढ़ी थी जिससे की गरीब लोग वंचित रह गए और फसल का जो नुकसान पहुँचा उससे न केवल उपज की आपूर्ति पर बल्कि दैनिक मजदूरी करने वालों की उपलब्धता पर भी असर पड़ा। उत्तरी आंध्र प्रदेश के 80% आश्रय कंक्रीट के होने के कारण, चक्रवात का भारी प्रभाव उन लोगों को झेलना पड़ा जो की निचले क्षेत्रों में रहते थेय पहले कभी न देखा हो ऐसे चक्रवात में फंस कर, पिछड़े लोगों को घरेलू संपत्ति से हाथ धोना पड़ा (घरेलू संपत्ति वह वस्तु होती है जिसके आप मालिक हो और जिसका कोई आर्थिक मूल्य है, जैसे की आपका घर, गाड़ी, बैंक खाता, रुपये, गहने आदि) और आजीविका के अवसरों में कमी महसूस हुई। ऐसी स्थिति में इन लोगों के स्वास्थ्य लाभ और पुनर्वास के लिए न केवल सरकार बल्कि दृढ़ स्थानीय प्रतिक्रिया तंत्र की भी आवश्यकता है।

इस बात को ध्यान में रखते हुए की नागरिक समाज संस्थाएं पिछड़े लोगों की सहायता का काम करती है, उन्हें इस अंतर्संयोजनात्मकता को समझना चाहिए और नीति नियोजन करते समय इसका ध्यान रखना चाहिए। पर्यावरण की दृष्टि से इस समस्या का समाधान निकालने के लिए, पर्यावरण को मुख्यधारा में लाना अतिआवश्यक हो गया है। पर्यावरण को मुख्यधारा[7] में लाने का

---

7 https://environmental-mainstreaming.org/index.html पर उपलब्ध है।

अर्थ है "संस्थानों के निर्णयों में प्रासंगिक पर्यावरणीय चिंताओं का सूचित समावेशन करना जिसका प्रभाव राष्ट्रीय, स्थानीय, और क्षेत्रीय विकास नीति, नियम, योजना, निवेश व कार्य पर पड़ता है।" क्योंकि विकासशील देशों में पर्यावरण और विकास की अंतर्निर्भरता को अनदेखा किया जाता है, इसीलिए आर्थिक विकास के साथ आते हैं प्रदूषण, घटती आजीविका, गरीबी और खराब स्वास्थ्य सेवाएं। विज्ञान और पर्यावरण केंद्र द्वारा प्रसारित 'भारत में पर्यावरण की स्थिति 2021' की रिपोर्ट में, 88 ऐसे क्षेत्रों का आकलन हुआ जो की 'प्रदूषित औद्योगिक क्षेत्र' थे, इससे पता चला की भारत में प्रदूषण बढ़ रहा है। इस डेटा से पता चला की जिन लोगों की जिम्मेदारी है प्रदूषण को नियंत्रित करना वे तारापुर जैसे क्षेत्र में भी अपना काम नहीं कर रहे (तारापुर 2009 से 2018 के बीच का सर्वाधिक प्रदूषित क्षेत्र माना गया है)। यह ऐसी अनेक रेपोर्टों में से एक है जो दर्शाती है की भारत का प्रदर्शन एक टिकाऊ भविष्य की ओर कैसा है, क्योंकि यह पर्यावरण को आर्थिक विकास से 'अलग' रखे हुए है।

पर्यावरण को मुख्यधारा में लाने का लक्ष्य है इसको 'अलग' रखने के भाव को कम करना, इसको एक बाहरी इकाई के रूप में देखना बंद करना और इसे आसानी से एक तरफ न धकेलने देना। ऐसा एकीकृत समाधानों से किया जा सकता है जिससे की कुशल योजनाएँ बन सकेंगी।

सिद्धांत और व्यवहार के बीच का अंतर हर स्तर पर साफ है, अंतर्राष्ट्रीय से लेकर व्यक्तिगत स्तर तक। मानक स्तर पर पर्यावरण को बचाने की बहुत बातें होती हैं, लेकिन, यह अभी वास्तविक जीवन में लागू नहीं हो पा रही। इसका कारण है अहमियत और अविलंबिता में कमी। इसीलिए, इस स्थिति में संगठन एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। जैसे की, यह करने का एक तरीका है कर्मचारियों और समुदायों के लिए कूड़ा निर्माण और निपटान की नीतियाँ बनाना और लागू करना। उन्हें उनकी जीवनशैली और कार्यशैली में भी ऐसी ही आदतें अपनाने को प्रोत्साहित भी किया जा सकता है। कुछ आम उदाहरण हैं पानी, बिजली, कागज, और प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग न करना, प्राकृतिक संसाधनों का अकुशल उपयोग न करना और व्यक्तिगत वाहनों का उपयोग कम करना। बदलाव और क्रांति के इस उत्प्रेरण से, व्यक्तिगत स्तर से शुरू करते हुए, पर्यावरण को मुख्यधारा में लाया जा सकता है। सिर्फ सामान्य वार्ताओं में ही नहीं बल्कि संगठनों, व पूरे विश्व के दिन–प्रतिदिन के कार्य में।

इसीलिए, जब लोगों के उद्धार की बात आए, तो विकास और पर्यावरण को अलग–अलग करके नहीं बल्कि आपस में जोड़ कर देखना अनिवार्य है। जलवायु आपातकाल के खतरे को ध्यान में रखते हुए, सामाजिक बदलाव के खाके के लिए पर्यावरण को विकास की वार्ताओं में मुख्यधारा का विषय बनाना आवश्यक है।

अध्याय 2
पर्यावरण आपातकाल और सतत विकास की ओर बढ़ते कदमः भारत के सिद्धांत और व्यवहार में अंतर पर एक अंतर्दृष्टि

पर्यावरण की समस्याएं देशों की सीमाओं से परे है, वे विश्व भर में बार–बार आने वाली और हर समय बदलते रहने वाली समस्याएं हैं। कोविड–19 और सीमा पर तनाव के चलते, पर्यावरण की स्थिति एक सार्वभौमिक चिंता के रूप में बरकरार है। विश्व के जलवायु में लगातार परिवर्तन के चलते, भूमंडलीय ऊष्मीकरण जैसे तथ्य उन समस्याओं को उजागर करते हैं जिनका सामना मानवों को करना पड़ेगा यदि उन्होंने प्रकृति का शोषण करना बंद नहीं किया। आसान भाषा में, भूमंडलीय ऊष्मीकरण का अर्थ है धरती के समुद्रों, भूभाग और पर्यावरण का धीरे–धीरे गर्म होना। प्राकृतिक रूप से होने वाले जलवायु परिवर्तन को जोर मिल जाता है प्रकृति का शोषण करती हुई मानव गतिविधियों से (जैसे की, ग्रीन हाउस गैसों का अभूतपूर्व उत्सर्जन)। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण प्रोग्राम के अनुसार, पर्यावरण आपातकाल की परिभाषा है, "अचानक आने वाली आपदा या दुर्घटना जो की प्राकृतिक, तकनीकी या मानव–निर्मित कारणों से होती है, ये इनके संयोजन से भी हो सकती है, जिससे की पर्यावरण को भीषण क्षति पहुँचती है या पहुँच सकती है और मानव जीवन व संपत्ति का नुकसान होता है या हो सकता है।" 1880 के दशक से वैश्विक तापमान 0.14 डिग्री फारेनहाइट प्रति दशक की दर से बढ़े हैं, लेकिन हाल में देखें तो इसकी दर दुगनी हो चुकी है (0.32 डिग्री फारेनहाइट)। 2013–2021 की अवधि के दौरान दस सबसे गर्म वर्ष देखे गए और इनमें 2021 छठा सबसे गर्म वर्ष था। विश्व का तापमान इतनी तेजी से बढ़ने के साथ ही, इसका असर जलवायु पर पड़ा है, जैसे की, बढ़ती गर्मी, मॉनसून पैटर्न में बदलाव, समुद्र का बढ़ता स्तर, और पारिस्थितिक तंत्रों व आजीविका को होती क्षति, इनसे विकास में भी बाधाएँ आ रही हैं।

हालांकि जलवायु परिवर्तन सभी को प्रभावित करेगा, लेकिन इसका रोष उन लोगों को झेलना पड़ेगा जो अनुकूलन करने में असमर्थ हैं और पिछड़े हुए हैं, जैसे की जलवायु आपदा का सामना करने वाले क्षेत्र में रहने वाले गरीब लोग। **ऊर्जा पर्यावरण और जल परिशद की भारत की जलवायु आलोचनीयता को आँकने की जिला स्तरीय बैठक**[8] में यह बताया गया की भारत के 130 करोड़ में से 63.8 करोड़ लोग ऐसे झीलों में रहते हैं जो भीषण जलवायु आपदाओं के केंद्र हैं (भारत के 75% जिले)।

8 मोहंटी, अविनाश, और श्रेय वाधवा। 2021। भारत की जलवायु आलोचनीयता – एक जिला स्तरीय आकलन। नई दिल्लीः ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिशद।

भारत के उन जिलों में रहने वाले लोग जहां भीषण जलवायु आपदाएं आती है

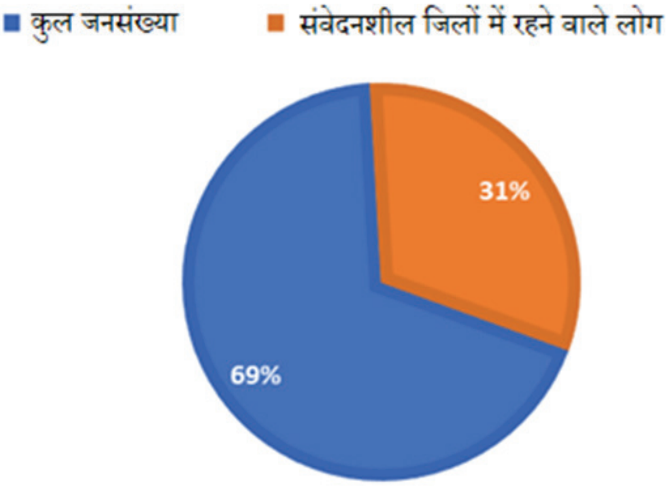

इस रिपोर्ट से यह भी सामने आया की प्राकृतिक आपदाओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई है, 250 (1970 से 2005 के बीच) से 310 (सिर्फ 2005 के बाद से)। बाढ़ की बात करें तो, भारत में 9 करोड़ 70 लाख ऐसे लोग रह रहे हैं जिन पर भीषण बाढ़ का असर पड़ रहा है, असम में भारत के आठ में से छह बाढ़ से सर्वाधिक ग्रस्त होने वाले जिले हैं (पिछले दशक के)। 2005 से, चक्रवात से ग्रस्त हुए जिलों की संख्या तीन गुना बढ़ी, और चक्रवात आने की आवृत्ति भी दुगनी हुई; पिछले दशक में 258 जिले ऐसे हैं जो चक्रवात से प्रभावित हुए हैं। इसके साथ ही, अत्यधिक वर्षा, बाढ़, और आंधी–तूफान, चक्रवाती घटनाओं में पिछले 50 वर्षों में 12 गुना बढ़ोतरी हुई है। इनके प्रभाव और विनाशकारी इसीलिए होते हैं क्योंकि इनसे बहुत क्षति पहुँचती है। मानव–निर्मित गतिविधियां जैसे खराब शहरी नियोजन और वनों की कटाई से भी शहरी क्षेत्रों में बढ़ोतरी हुई है। उपयोगी भूमि का सतह परिवर्तन, वनों का कटाव, और वनों पर अतिक्रमण के कारण, कई क्षेत्रों में एक ही मौसम में बाढ़ और अकाल दोनों देखने को मिल रहे हैं, जैसे ओडिशा, उत्तर प्रदेश, तमिल नाडु और बिहार के कुछ जिले।

सी.इ.इ.डब्ल्यू. के प्रोग्राम अध्यक्ष अविनाश मोहंटी के अनुसार[9],

---

"हाल की जलवायु आपदाओं का कारण है पिछले 100 वर्षों में तापमान में सिर्फ 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी। भारत पहले से ही जलवायु आपदाओं से सर्वाधिक ग्रस्त देशों की सूची में पाँचवें स्थान पर आता है और यह विश्व का बाढ़ केंद्र भी बनने वाला है। वित्त और प्रौद्योगिकी की उपलब्धता और जलवायु संबंधी डेटा जलवायु प्रतिरोधक्षमता बनाने के लिए आवश्यक है, खासकर वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए। जोखिम मूल्यांकन सिद्धांतों को अपनाना भारतीय कृषि, उद्योग और बड़े पैमाने के ढांचागत परियोजनाओं को जलवायु परिवर्तन के रोष से बचाने के लिए अनिवार्य है।

यह शोध कहती है की जलवायु आपदाओं के एक व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव की सीमा को मापने के लिए, हम अनावरण का आकलन कर सकते हैं (एक व्यक्ति और जलवायु आपदा के बीच संपर्क की तीव्रता), संवेदनशीलता का आकलन कर सकते हैं (जलवायु परिवर्तन के प्रति व्यक्ति की संवेदनशीलता, जो की उनके स्वास्थ्य, भौगोलिक स्थान, आहार आदि के अनुसार अलग हो सकती है), और अनुकूलन क्षमता (किसी व्यक्ति या समुदाय की जलवायु आपदा से अनुकूलन और सामना करने की क्षमता)।

---

9 मोहंटी, अविनाश, और श्रेय वाधवा। 2021। भारत की जलवायु आलोचनीयता – एक जिला स्तरीय आकलन। नई दिल्लीः ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिषद।

यह अध्ययन जोखिम और आलोचनीयता मूल्यांकन को हर स्तर पर मुख्यधारा में लाने की सिफारिश करता है। जिससे की उस क्षेत्र की अनुकूली क्षमता में बढ़ोतरी होगी, और सतत विकास की ऐसी योजनाएं बन सकेगी जिनको जिले अपना सकें और विकास नीति बना सकें। भारत की जलवायु संवेदनशीलता के जिला स्तरीय नक्शे से पता चलता है की यदि भारत एक मजबूत जोखिम शमन तंत्र लागू करता और आपदा प्रबंधों में निवेश करता तो इससे भारत के ₹676 ट्रिल्यन बच जाते। इससे यह पता लगता है की योजना बनाते समय पर्यावरण को ध्यान में रखना कितना अनिवार्य है।

ऐसे ही, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने हाल ही में जलवायु परिवर्तन पर एक रिपोर्ट प्रसारित की जिसका शीर्षक था 'भारतीय क्षेत्र पर जलवायु परिवर्तन का आकलन[10]' जो की जलवायु परिवर्तन के क्षेत्रीय डेटा और देश में आने वाली जलवायु आपदाओं को समाहित करती है। जलवायु परिवर्तन अध्ययन केंद्र द्वारा बनाई गई यह रिपोर्ट अद्वितीय है, इसमें मानव निर्मित जलवायु परिवर्तन को गहराई से देखा गया है। इसमें बताया गया की भारत के ऊपर की सतही हवा का तापमान 1901 और 2018 के बीच में 7 डिग्री सेल्सियस से बढ़ा है, जिससे पर्यावरण में गर्मी बढ़ी है। क्षेत्रीय विशिष्ट प्रभावों और भूमंडलीय उष्मीकरण की जटिल अंतर्संयोजनात्मकता के कारण भारत में वर्षा, अकाल, बाढ़ और चक्रवातों की तीव्रता में बढ़ोतरी हो रही है। औद्योगिक क्रांति के बाद से मानवों द्वारा अत्यधिक शोषण के कारण विश्व का औसत तापमान 1 डिग्री सेल्सियस से बढ़ा है। भारत की बात करें तो, यहाँ पर 1950 के दशक के पश्चात, अकाल आने की दर और अकाल ग्रस्त क्षेत्र बढ़े हैं। देश के जलवायु में आते तेज बदलावों का असर देश की जीव–विविधता और प्राकृतिक संसाधनों पर भी पड़ेगा। क्षेत्रीय रेकॉर्ड और डेटा के अभाव के कारण, क्षेत्रीय और जिला स्तर पर होने वाले बदलावों पर ध्यान नहीं जाता और इसीलिए, उनसे निपटा भी नहीं जाता। जलवायु परिवर्तन का असर विश्व भर के लोगों पर अलग प्रकार से पड़ता है और इसीलिए उनका विकास और जीवन स्तर भी भिन्न–भिन्न प्रकार से प्रभावित होता है। आसाम के एक मजदूर की जरूरतें राजस्थान के मजदूर से अलग होंगी, उनकी समस्याएं अलग होंगी और इसीलिए, उनके दैनिक जीवन की बाधाएँ अलग होंगी। सही नीति और प्रोग्राम बनाने के लिए, और क्षेत्रीय स्तर पर आपदा प्रबंधन में सहायता के लिए प्रासंगिक अनुकूलन रणनीतियाँ बनाने के लिए, सरकार को किसी क्षेत्र के विकास और सामाजिक बदलाव पर काम करते समय पर्यावरण को मुख्य मुद्दे के रूप में देखना होगा।

पर्यावरण और विकास की परस्पर निर्भरता एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें भारत को कार्य करना है। 2021–22 की संयुक्त राष्ट्र मानव विकास सूची (एच.डी.आई) में, जो की 8 सितंबर 2022 को जारी की गई थी, भारत 191 देशों में से 132वे स्थान पर था। मानव विकास सूची एक देश के स्वास्थ्य, शिक्षा, और औसत आय का माप है। कोविड–19 और यूक्रेन की जंग के कारण लगभग 90% देशों की एच.डी.आई. 2020 या 2021 में घटी थी, जिनसे दुनिया के सामाजिक और आर्थिक ढांचे हिल गए। हाल की मानव विकास सूची रिपोर्ट – संदेहयुक्त समय, अस्त–व्यस्त जीवनः हमारी बदलती दुनिया में भविष्य को आकार देना[11], परस्पर जुड़े संकटों के लिए व्यक्तिगत रूप से प्रतिक्रिया करने में वैश्विक अक्षमता से विभिन्न संकटों के प्रतिच्छेदन पर प्रकाश पड़ता है। भारत के एच.डी.आई अंक 2020 में 0.645 था और हाल की रिपोर्ट में 0.633, इस गिरावट से पता चलता है की भारत को परस्पर जुड़े संकटों से निपटने में समस्या होती है और इस पर इसकी घटती जीवन प्रत्याशा का भी प्रभाव पड़ा है जो की 69.7 से घाट कर 67.2 हो गई (इसका कारण है महामारी के दौरान आई स्वास्थ्य आपदा, जो बड़ी जनसंख्या होने के कारण प्रभावित हुई थी)।

---

10 आर. कृष्णन, जे. संजय, छेलप्पन ग्नानशीलन, मिलिंद मजूमदार, अश्विनी कुलकर्णी, सुप्रियो चक्रवर्ती। 'भारतीय क्षेत्र पर जलवायु परिवर्तन का आकलन' पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की रिपोर्ट, भारत सरकार। स्प्रिंगर सिंगापूर। Ebook ISBN: 978-981-15-4327-2

11 संयुक्त राष्ट्र विकास प्रोग्राम। 2022। मानव विकास रिपोर्ट 2021–22ः अस्त–व्यस्त जीवनः हमारी बदलती दुनिया में भविष्य को आकार देना

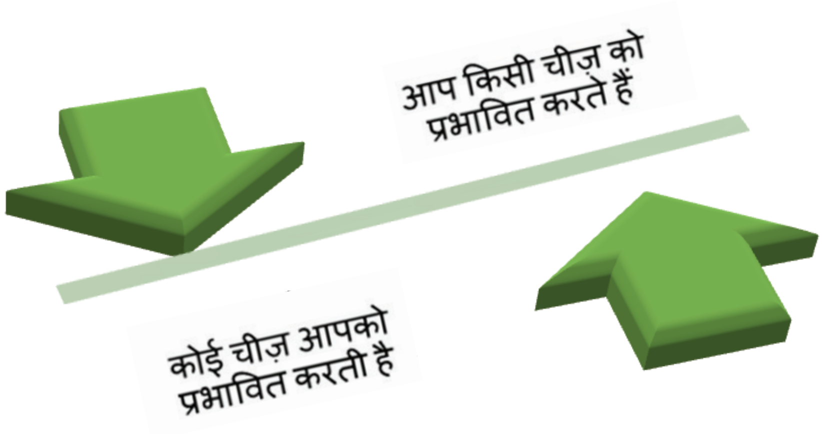

"जलवायु परिवर्तन एक गंभीर समस्या है, और इसे निश्चित रूप से हल करने की आवश्यकता है। यह हमारी प्राथमिकता होने योग्य है।"
बिल गेट्स, माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक

इस परस्पर संबंध को और पर्यावरणीय आपातकाल में इसकी भूमिका को भाँपते हुए, विश्व भर के नेताओं ने कई कार्य किए हैं, जैसे पेरिस समझौता, ग्लासगो समझौता और संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों को बनाना, इनसे विभिन्न पर्यावरण और जलवायु से संबंधित समस्याओं का सामना किया जा सकता है।

पेरिस समझौता, जो की जलवायु परिवर्तन पर कानूनी रूप से बाध्य करने वाली एक अंतर्राष्ट्रीय संधि है, जिसको 2015 में 196 देशों ने पार्टियों का सम्मेलन[12] (सी.ओ.पी.21) में अपनाया था (सी. ओ.पी. एक संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन है जिसका वे देश हिस्सा हैं जिन्होंने जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के ढांचे के सम्मेलन में हस्ताक्षर किया था)। इस समझौते का लक्ष्य है भूमंडलीय उष्मीकरण को सीमित करना और किसी भी तरह देशों द्वारा ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को विनियमित करना। इस सम्मेलन को अच्छा माना जाता है क्योंकि पहली बार विभिन्न देश एक मत के लिए आगे आए जो था जलवायु परिवर्तन का सामना करना। यह समझौता चाहता है की पूर्व–उद्योग स्तरों की तुलना में भूमंडलीय उष्मीकरण 2 डिग्री या 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रहे। यह जलवायु कार्य के पंच वर्षीय चक्र पर काम करेगा जिससे आर्थिक और सामाजिक बदलाव लाने की कोशिश की जाएगी, जिसके बाद उनको जलवायु कार्यों के लिए अपनी योजना प्रस्तुत करनी होगी जिसका नाम होगा 'राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान' (एन.डी.सी.)। एन.डी.सी. पेरिस समझौते में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक देश की ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को कम करने की योजनाओं को समाहित करता है, और जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होने और इससे लड़ने की क्षमता बनाने की योजनाओं का भी। भारत के पहली एन.डी.सी. में तीन मुख्य लक्ष्य थे: पहला था अर्थव्यवस्था की उत्सर्जन तीव्रता को 2005 के स्तरों के मुकाबले 33–35% कम करना, दूसरा था 2030 तक स्थापित विद्युत शक्ति का 40 प्रतिशत उत्पादन गैर–जीवाष्म आधारित ऊर्जा संसाधनों से करना और तीसरा लक्ष्य था नए जंगलों और पेड़ों से 2.5–3 गीगाटन कार्बन डाइऑक्साइड के समकक्ष एक नया कार्बन सिंक बनाना।

ग्लासगो[13] में हुई संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (सी.ओ.पी.26) में, विश्व के लगभग 120 नेताओं को 2 सप्ताहों के लिए जलवायु परिवर्तन के सभी पहलुओं और इससे प्रभावी ढंग से निपटने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए प्रतिभागियों, पर्यवेक्षकों और मीडिया प्रतिनिधियों के साथ लाया

12 http://www.cop21paris.org/about/cop21 पर उपलब्ध

13 यूएनएफसीसीसी ग्लासगो जलवायु समझौता, निर्णय –/ कोप.26, अग्रिम असंपादित संस्करण' https://unfccc.int/documents/310475 [1/CP.26], पर उपलब्ध है

गया। इसका परिणाम था वैश्विक ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में कमी और पेरिस समझौते में निध ारित किए गए मार्ग से भी अधिक व्यापक मार्ग बनना। यह नीति नियोजन में सुधार लाने के लिए एक ठोस कदम बना क्योंकि इसने जलवायु आपातकाल को मान्यता दी और यह स्वीकारा की जलवायु परिवर्तन का प्रगतिशील देशों पर प्रभाव बाढ़ रहा है। सी.ओ.पी.26 में, पाँच वर्षीय नियम के अनुसार भारत ने अपनी एन.डी.सी. में 2020 में बदलाव किए। नई एन.डी.सी. में बताया गया एक "स्वस्थ और टिकाऊ जीवनशैली जो की संरक्षण और संतुलन की परंपरा और मूल्यों पर आध ारित हो, जो की एक ऐसे जन आंदोलन के माध्यम से भी होगा जो जलवायु परिवर्तन से मुकाबला करेगा, जिसका नाम है 'लाइफ'–'जीवनशैली पर्यावरण के लिए'। उन्होंने भारत का "एक ऐसा मार्ग अपनाना जो की आर्थिक विकास के तदनुरूपी स्तर पर अब तक दूसरों द्वारा अनुसरण किए गए मार्ग से अधिक स्वच्छ और जलवायु के अनुकूल हो।"

"दुनिया संकटों के समूह का सामना कर रही है जो मानवता के अस्तित्व के सामने लिए खतरा बने खड़े है। इन सभी संकटोंको रोकने के उपाय – एसडीजी में पूर्णतः तौर से संबोधित किए जाते हैं किन्तु हम उन्हें अपने जोखिम पर अनदेखा करते हैं। "

लियू जेनमिन[14], आर्थिक और सामाजिक मामलों के महासचिव

पर्यावरण और विकास की परस्पर निर्भरता को मध्य नजर रखते हुए, संयुक्त राष्ट्र ने कई बार इन दोनों के बीच सम्तोलित संबंधों पर जोर दिया है। स्थिरता की भावना पर निर्मित यूएनडीपी का लक्ष्य टिकाऊ विकास (एसडीजी)[15] का हैं जो की 2030 के एजेंडा पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह एजेंडा सभी प्रकारकी गरीबी को नष्ट करना चाहता है क्योंकि यह एक वैश्विक चुनौती है और टिकाऊ विकास के लिए पूर्वाकांक्षित शर्त है। यह 17 टिकाऊ विकास लक्ष्यों और 169 एसे लक्ष्यों को प्रस्तुत करता है जो सभी के लिए मानव अधिकारों और लैंगिक समानता की भावना को शामिल करता है। यह जिन महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर काम करता है उनमें से एक ग्रह या पृथ्वी हैय एसडीजी का उद्देश्य इस पृथ्वी को निम्नीकरण से बचाना, इसके प्राकृतिक संसाधनों के उपभोग, उत्पादन और प्रबंधन के लिए टिकाऊ प्रथाओं को प्रेरित करना और जलवायु में हो रहे परिवर्तन पर तुरंत कार्रवाई करना है।

गरीबी और असमानता के बीच टिकाऊ विकास के लिए मानवता द्वारा जिन आपतियों का सामना किया जाता है वह आपस में परस्पर सम्बंधित हे इस सत्य को स्वीकार करते हुए, एसडीजी वैश्विक स्वास्थ्य खतरों, प्राकृतिक आपदाओं, प्राकृतिक संसाधनों की कमी और प्राकृतिक गिरावट (मरुस्थलीकरण, सूखा, भूमि क्षरण, मीठे पानी) के प्रतिकूल प्रभावों पर भी विचार करते हैं। टिकाऊ विकास के लिए देश के मुख्य प्रयास के रुप मे यह देखा गया है कि जलवायु परिवर्तन सबसे बड़ी समकालीन आपत्तियों में से एक है क्योंकि कई देश अपने अस्तित्व के लिए अपने जैविक समर्थन प्रणाली (पर्यावरण) पर जवाब देते हैं। लक्ष्य 6 (स्वच्छ जल और स्वच्छता), लक्ष्य 7 (सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा), लक्ष्य 11 (टिकाऊ शहर और समुदाय), लक्ष्य 12 (सतत खपत और उत्पादन पैटर्न), 13 (जलवायु कार्रवाईः जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करें), लक्ष्य 14 (पानी के नीचे जीवनः महासागरों, समुद्रों और समुद्री जीवों का संरक्षण और स्थायी रूप से उपयोग करें) सतत विकास के स्रोत'[16]) और लक्ष्य 15 (भूमि पर जीवनः भूमिगत प्रणालियों के निरंतर उपयोग की रक्षा, पुनर्स्थापना और बढ़ावा देना, जंगलों का स्थायी प्रबंधन, मरुस्थलीकरण का मुकाबला, और भूमि क्षरण को रोकना और जैव विविधता हानि को रोकना) पर्यावरण के पहलू पर स्पष्ट रूप से ध्यान केंद्रित करना

14 उपलब्धता https://unstats.un.org/sdgs/report/2022/The-Sustainable-Development-Goals-Report-2022.pdf

15 UN General Assembly, *Transforming our world : the 2030 Agenda for Sustainable Development*, 21 October 2015, A/RES/70/1, available at: https://www.refworld.org/docid/57b6e3e44.html [accessed 27 October 2022]

16 Details added by the author

भारत अपनी दूसरी स्वैच्छिक राष्ट्रीय समीक्षा ((वीएनआर)[17] में एक ऐसी प्रक्रियामें है जिसके माध्यम से देश 2030 के एजेंडा को लागू करने में हुई राष्ट्रीय प्रगति के आंकलन को प्रस्तुत करते हैं, जिसमें इसके 17 टिकाऊ विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना शामिल है) एक ''संपूर्ण–समाज'' के लिए एक आदर्श बदलाव है। एक एसा दृष्टिकोण जिसमें भारत सरकार उप–राष्ट्रीय और स्थानीय सरकारों, नागरिक समाज संगठनों, स्थानीय समुदायों, कमजोर परिस्थितियों में लोगों और निजी क्षेत्र के साथ एजेंडा 2030 के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं को प्राप्त करने के लिए साझेदारी करती है। भारत के सबका साथ सबका विकास (समावेशी विकास के सामूहिक प्रयास) के अपनाए गए आदर्श वाक्य), सशक्त भारत (सशक्त और लचीला भारत), स्वच्छ भारत – स्वस्थ भारत (स्वच्छ और स्वस्थ भारत) और सनातन भारत – सनातन भारत (सतत भारत) सरकार द्वारा किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मजबूत गतिविधियों को दर्शाता है।

भारत में थ्योरी–प्रैक्टिस गैप महामारी के बाद बहुत प्रचलित है और इसे अपनी रणनीति का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए। भारत 163 देशों में से 2021 में 120 रैंक पे था जो की फिसलकर 2022 में 121 पर आ गया है, जिसका कुल एसडीजी स्कोर 100 में से 66 है। 17 में से 11 लक्ष्यों (शून्य भूख, अच्छे स्वास्थ्य और भलाई सहित) को प्राप्त करने में कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। लैंगिक समानता और टिकाऊ शहर और समुदाय), द स्टेट ऑफ इंडियाज एनवायरनमेंट इन फिगर्स, 2022 ने खुलासा किया कि भारत अपने लिए निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने में विफल हो रहा है। उदाहरण के लिए, 2022–23 तक सभी को पाइप से सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने के लक्ष्य का केवल 45% ही हासिल किया जा सका है। इसके अलावा, जैसा कि राष्ट्रीय वन नीति में परिकल्पित है, वन क्षेत्र के 33.3% को बढ़ाने का लक्ष्य 2019 तक पिछड़ रहा है क्योंकि भारत का केवल 21.6% वन कवर के अधीन था। इसके शीर्ष पर, भारत को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और भूमि के पहलुओं पर जीवन से निपटने में गंभीर रूप से नुकसान उठाना पड़ा। 28 भारतीय राज्यों में से, झारखंड और बिहार वर्ष 2030 तक एसडीजी लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सबसे कम तैयार हैं, जबकि केरल, तमिलनाडु और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्य पहले स्थान पर हैं (नीति आयोग के एसडीजी इंडिया इंडेक्स 2020–21 से एकत्र की गई जानकारी)[18] .

17 उपलब्धता https://sustainabledevelopment.un.org/content/documents/26279VNR_2020_India_Report.pdf

18 उपलब्धता https://sustainabledevelopment.un.org/content/documents/26279VNR_2020_India_Report.pdf

संयुक्त राष्ट्र टिकाऊ विकास लक्ष्यकी नवीनतम रिपोर्ट 2022 से ज्ञात होता है कि हाल की वैश्विक घटनाओं के प्रभाव उन लक्ष्यों की उपलब्धि पर कितने विनाशकारी थे। कोविड 19 महामारी ने कई लोगों की जान ले ली है, इसने न केवल वैश्विक स्वास्थ्य प्रणालियों पर इस हद तक वार किया कि वे ढह गईं, बल्कि इसने कई लोगों को गरीबी की नई तह तक धकेल दिया। सबसे कमजोर वर्गमें शामिल होने वाली गरीब महिलाओं और बच्चों जैसे लोगों को सबसे ज्यादा तकलीफ उठानी पड़ी। उदाहरण के तौर, स्कूल न जा पाने के कारण, न केवल बच्चों की शिक्षा को हानी हुई, बल्कि उनके पोषण का प्राथमिक स्रोत भी बंद हो गया, विशेषकर उनके लिए जो मध्याह्न भोजन के लिए स्कूलों में जाते थे। भारत विशेष रूप से कोविड –19 संकट से बहुत प्रभावित था, अप्रैल से जून 2020 तक भारत की जीडीपी में 24.4% की गिरावट आई, जिसके परिणामस्वरूप देश में आजादी के बाद सबसे खराब आर्थिक संकुचन देखा गया। अप्रैल और मई 2020 के बीच भारत के पहले राष्ट्रीय लॉकडाउन के दौरान, व्यक्तिगत आय में लगभग 40% की गिरावट आई, जबकि समाज के निचले पायदान पर रहने वाले परिवारों ने तीन महीने की आय खो दी। सिर्फ पहले लॉकडाउन के बाद 230 करोड़ लोग गरीबी में गिर गए और शहरी बेरोजगारी दर अप्रैल से जून 2019 में 8.8% से बढ़कर अप्रैल से जून 2020 तक 20.8% हो गई। दूसरी लहर में, ग्रामीण भारत के प्रभावित होने से विश्व स्तर पर सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ। शहरी भारत से भी बदतर अप्रैल–मई 2021 के बीच बायोमेडिकल कचरे में 46% की वृद्धि हुई और संक्रामक रोगों के जोखिम ने 2006 के बाद पहली बार प्रमुख वैश्विक आर्थिक खतरों की सूची में प्रवेश किया। 'स्टेट ऑफ इंडियाज एनवायरनमेंट 2021' रिपोर्ट में सेंटर फॉर साइंस एंड पर्यावरण जलवायु परिवर्तन के खतरे पर जोर देता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि चरम मौसम की घटनाओं और प्राकृतिक आपदाओं के कारण आंतरिक विस्थापन के मामले में भारत दुनिया में चौथा सबसे बड़ा हिट था। रिपोर्ट में जलवायु परिवर्तन के प्रति भारत की पिछड़ी प्रतिक्रिया को भी सामने रखा गया है, उदाहरण के लिए अक्षय ऊर्जा के मामले में, लक्ष्य का केवल 55% ही पूरा होता है और इसलिए सैद्धांतिक रूप से किए गए वादे को पूरा करना असंभव है। जिसका एक और उदाहरण 2021–22 तक कम से कम 50 सौर पार्कों को स्थापित करने का वादा करने में देश की अक्षमता है।

भारत सैद्धांतिक और भू–राजनीतिक मोर्चे पर जो वादा करता है, वह व्यवहार में हासिल करने में असमर्थ है। जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग की दोहरी घटना पर्यावरण आपातकाल का कारण बनती है जिसे तेजी से जरूरतों के आकलन और सक्रिय कार्रवाई के माध्यम से निपटा जाना चाहिएय इसलिए, पर्यावरण को मुख्यधारा में लाना समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

अध्याय 3
भारतीय सीएसओस में पर्यावरण की मुख्यधारा पर वाणी का प्रारंभिक अध्ययन

ऐसा देश जहां 80% से अधिक आबादी उन जिलों में रहती है जो जलवायु की घटनाओं के लिए अत्यधिक संवेदनशील हैं वहां सक्रिय कार्रवाई की आवश्यकता एक विकल्प नहीं बल्कि एक तत्काल आवश्यकता है। यह यात्रा देश और उसके लोगों के विकास के लिए पर्यावरण संबंधित विवाद से परस्पर जुड़ी प्रकृति को स्वीकार करने के साथ शुरू होती है, सभी स्तरों पर नीतियों और कार्यक्रमों में पर्यावरण का समावेश होना आवश्यक है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि पर्यावरण की स्थिति उन समुदायों को प्रभावित करती है जिनके साथ वे काम करते हैं, सीएसओस को न केवल महामारी के बाद की बुराइयों से निपटने के लिए चुनौतियों के एक नए सेट से निपटना होगा एवं बढ़ते पर्यावरणीय खतरों और जलवायु आपात स्थितियों से भी निपटना होगा। इन सबसे चुनौतीपूर्ण समय के दौरान, समस्या के मजबूत मूल्यांकन के बिना, हर कार्रवाई अधूरी रह जाएगी। इसलिए, इस तथ्य पर निर्माण करते हुए कि अर्थव्यवस्था और समाज सामाजिक परिवर्तन के लिए पर्यावरण के साथ एक अमूर्त बंधन साझा करते हैं, सीएसओ के लिए यह महत्वपूर्ण है कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्थायी भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने के लिए एक कारक और कारण दोनों के रूप में पर्यावरण का आकलन किया जाए।

कोविड–19 की चुनौतियां अभी भी भारत को सता रही हैं। पूर्व–महामारी की अवधि की तुलना में सीएसओस के पास अधिक चुनौतियां है। पर्यावरणीय बदलाव ने उनके संचालन और वित्त पोषण को प्रभावित किया है। नए फंडर्स की अपेक्षाओं का पालन करने और उनके विचारों के साथ खुद को संरेखित करने के लिए, भारतीय सीएसओ को फंडिंग के रास्ते बदलने और अपनी संगठनात्मक क्षमता को मजबूत करने के ज्ञान से खुद को लैस करना चाहिए। सीएसओ के लिए फंडर्स के तीन प्रमुख रास्ते हैं, कॉरपोरेट, ग्लोबल (इंटरनेशनल फंडर्स) और यूथ। इस तथ्य के बावजूद कि उनके पास मूल्यों और आवश्यकताओं के तीन अलग–अलग सेट हैं, एक चीज उन्हें एकजुट करती है– पर्यावरण के प्रति सामाजिक जिम्मेदारी की भावना।

कंपनी अधिनियम 2013 ने कॉरपोरेट के लिए सामाजिक क्षेत्र के हस्तक्षेपों को निधि देना अनिवार्य कर दिया। इससे सीएसओस की सोच और संचालन में बदलाव आया। यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि अधिनियम की अनुसूची टप्प के तहत कंपनियां कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) में भाग ले सकती हैं। सीएसआर व्यवसायों द्वारा वित्तीय क्षेत्र से परे देखने और अपने व्यावसायिक कार्यों में सामाजिक और पर्यावरणीय चिंताओं को शामिल करने की प्रतिबद्धता है। कंपनी अधिनियम 2013 से पहले (2013 में शामिल, कंपनी अधिनियम भारत में कॉर्पोरेट कानून

को नियंत्रित करता है, जिसमें निगमन, जिम्मेदारियां, निदेशक और कंपनियों का विघटन शामिल है।) अधिनियम 1956। हालांकि, बदले जाने के बाद, इसने भारत में सूचीबद्ध कंपनियों के लिए सीएसआर दायित्वों पर एक अतिरिक्त खंड यानी धारा 135– खंड जोड़ा, जो सफल परियोजना कार्यान्वयन के लिए निष्पादन, निधि आवंटन और रिपोर्टिंग से संबंधित आवश्यक पूर्वापेक्षाओं को शामिल करता है। इस नए अधिनियम के आगमन के साथ, भारत सीएसआर गतिविधियों को अनिवार्य रूप से सीएसआर पहलों की रिपोर्टिंग करने वाला कानून बनाने वाला पहला देश बन गया। अधिनियम के तहत कंपनियों को प्रत्येक वित्तीय वर्ष में अपने औसत शुद्ध लाभ का कम से कम 2% नागरिक समाज संगठनों पर खर्च करने की आवश्यकता थी। कंपनियां ''पर्यावरणीय स्थिरता, पारिस्थितिक संतुलन, वनस्पतियों और जीवों की सुरक्षा, पशु कल्याण, कृषि वानिकी, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और मिट्टी, हवा और पानी की गुणवत्ता बनाए रखने में भाग ले सकती हैं, जिसमें केंद्र द्वारा स्थापित स्वच्छ गंगा फंड में योगदान शामिल है। गंगा नदी के कायाकल्प के लिए सरकार"। इसलिए, सीएसओस के लिए न केवल उस अनिश्चित स्थिति के कारण पर्यावरण को एकीकृत करना फायदेमंद है, बल्कि इसलिए भी क्योंकि यह उनके लिए कॉर्पोरेट के माध्यम से धन और निवेश एकत्र करने का एक मार्ग खोलता है। इसी तरह, सोशल स्टॉक एक्सचेंज एक मध्यस्थ मंच के रूप में कार्य करता है जिसे निजी और गैर–लाभकारी दोनों क्षेत्रों की सेवा के लिए स्थापित किया जा रहा है। यह भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) द्वारा नियंत्रित किया जाता हे जिसका उद्देश्य धन जुटाने के लिए एक पूरक राजस्व के साथ सामाजिक उद्यम (गैर–लाभकारी संगठन और उनके प्राथमिक लक्ष्य के रूप में सामाजिक उद्देश्य और प्रभाव वाले लाभकारी सामाजिक उद्यम) प्रदान करना है। शोषण पर पनपने वाली पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में, यह उचित है कि सीएसओस ऐसे कृत्यों और आदान–प्रदान से लाभान्वित हों।

सामान्य तौर पर युवा नैतिकता और सामाजिक चेतना के सिद्धांतों पर काम करते हैं। खरीदारों के रूप में, वे टिकाऊ उत्पादों के लिए अतिरिक्त राशि का भुगतान करने के लिए तैयार हैं। विक्रेता के रूप में, कंपनियां अपनी ब्रांड छवि को बढ़ाने के लिए सीएसआर (CSR) में कार्यान्वित होती हैं। हालाँकि, सीएसआर (CSR) के समान लेकिन अधिक मापने योग्य ढांचा जो कॉर्पोरेट जगत की कंपनियां उपयोग करती हैं, वह ESG (पर्यावरण, सामाजिक और शासन) है। जबकि सीएसआर एक आंतरिक ढांचा है जो आंतरिक कामकाज (कॉर्पोरेट स्वयंसेवा, कार्बन पदचिह्न को कम करना आदि) दिखाने पर केंद्रित है, ईएसजी स्थिरता का अधिक मात्रात्मक उपाय प्रदान करता है जो निवेशकों को बेहतर मूल्यांकन में मदद करता है। यह पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन कारकों के आधार पर व्यवसायों का मूल्यांकन प्रदान करता है और इसलिए इसका उपयोग निवेशकों द्वारा यह आकलन करने के लिए किया जा सकता है कि कंपनी कितनी टिकाऊ है।

कॉरपोरेट सामाजिक प्रभाव को भी एक उत्पाद के रूप में देखते हैं और इसलिए निवेशकों के रूप में किसी कारण का ब्रांड मूल्य उनके लिए आवश्यक है। ईएसजी प्रथाओं को उद्योगों, भौगोलिक क्षेत्रों और आकारों के संगठनों द्वारा तेजी से अपनाया जा रहा है। यूक्रेनी संकट के आगमन और भू–राजनीति पर इसके प्रभाव के साथ, कंपनियों के निर्णय लेने में ईएसजी विचारों में वृद्धि को अग्रभूमि में रखा जा रहा हैय विभिन्न कंपनियां रूस में बड़े फैसले ले रही हैं और परिचालन बंद कर रही हैं और सामाजिक चिंताओं के जवाब में गतिविधियां शुरू कर रही हैं। इसलिए, ईएसजी जैसे ढांचे के माध्यम से, हम समझते हैं कि कैसे स्थिरता के प्रति कंपनी की कार्रवाइयां उन्हें एक ऐसी छवि बनाने में मदद करती हैं जो उनके प्रचार में सहायता करती है और यही कारण है कि सीएसओ निवेशकों से लाभान्वित हो सकते हैं और न केवल उनकी संगठनात्मक नीतियों में बल्कि उनके कार्य के क्षेत्र।

सर्वेक्षण के माध्यम से पाए गए निष्कर्ष

नए निवेशकों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को प्रेरित करने और अनुकूलित करने के लिए सीएसओ की सहायता करने के लिए, राष्ट्रीय नेटवर्क के रूप में वाणी की भूमिका का उद्देश्य आम क्षेत्रीय मुद्दों पर अभिसरण लाना है और इनमें एक क्षेत्र पर्यावरण है। वाणी ने भारत में अपने सदस्य संगठनों और अन्य सीएसओ के बीच पर्यावरण मुख्यधारा पर एक प्रारंभिक ऑनलाइन सर्वेक्षण किया। अध्ययन का उद्देश्य संगठनों के भीतर पर्यावरण और कार्य क्षेत्र के बिचका सह–संबंध और पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं के बारे में जागरूकता का आंकलन करना था। दीर्घकालिक उद्देश्य सीएसओ को संगठन की नीति, कार्यक्रमों और परियोजनाओं में पर्यावरण को मुख्यधारा में लाने के लिए प्रोत्साहित करना था। सर्वेक्षण में कुल 79 संगठनों ने भाग लिया, जिनमें से 54 वाणी के सदस्य संगठन थे।

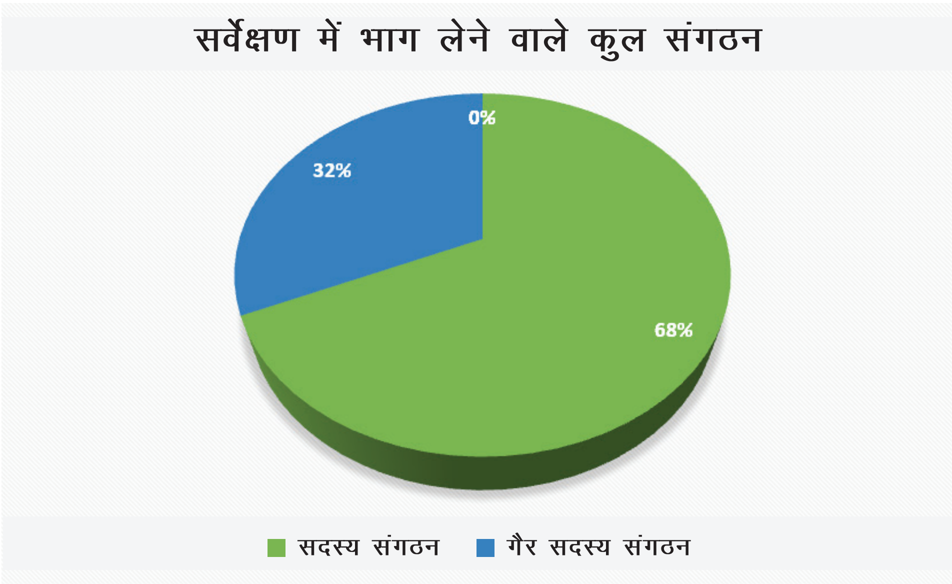

इस सर्वेक्षण में भिन्न भिन्न कानूनी विभाग वाले संगठनों ने हिस्सा लिया से 80% सोसायटी थे और 16% ट्रस्ट थे। शेष अन्य वर्ग के थे।

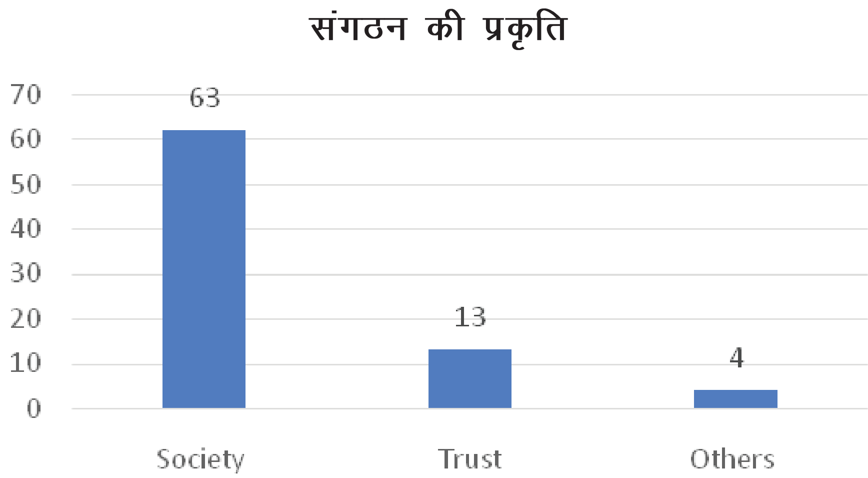

कार्य की टाइपोलॉजी या अध्ययन से दिखाया गया कि लगभग 86 प्रतिशत प्रतिभागी संगठन सामुदायिक विकास की और काम करने रुझान कर रहे थे। 80 प्रतिशत संगठनों ने प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण पर काम किया है।

काम की टाइपोलॉजी

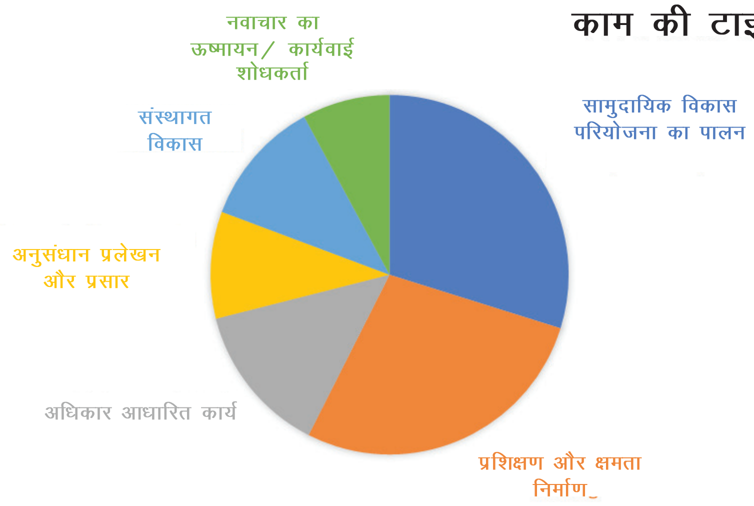

पर्यावरणय नीति की आवश्यकता हरित चेतना के मूल्यों और पाठों के साथ एक संगठन के सचेत एकीकरण से उपजी है। पर्यावरण को अपनी नीतियों, कार्यक्रमों और परियोजनाओं में मुख्यधारा में लाना न केवल उन समुदायों के लिए एक स्थायी भविष्य के प्रति एक संगठन की प्रतिबद्धता को उजागर करता है, जिनकी वे सेवा करते हैं, बल्कि यूएनडीपी के टिकाऊ विकास लक्ष्य 13 अधिवक्ताओं के मौलिक मूल्यों का प्रसार भी करते हैं। वाणी के सदस्य संगठनों में से 44 प्रतिशत संगठनों की पर्यावरण नीति थी। पिछले दशक में स्थापित किए गए संगठनों के साथ प्रतिक्रिया करने वाले 24 प्रतिशत संगठनों की तुलना में 76 प्रतिशत संगठनों के पास 16 वर्षों से अधिक के कार्य अनुभव के साथ औपचारिक पर्यावरण नीति थी।

प्रतिक्रिया देने वाले संगठनों में से 89 प्रतिशत ने उल्लेख किया कि उनके लक्षित लाभार्थी बदलते परिवेश से प्रभावित हो रहे हैं। हालांकि केवल 50 प्रतिशत ने स्वीकार किया कि उनके संगठन के काम ने उनके पर्यावरण को प्रभावित किया है। पर्यावरण के मुद्दों पर काम करने वाले केवल 44 प्रतिशत संगठनों के पास औपचारिक पर्यावरण नीति थी। उपरोक्त व्यवहार के संभावित कारण संगठनों के बीच पर्यावरणीय चिंताओं और संबंधित प्रथाओं को औपचारिक रूप देने की प्रतिबद्ध ता की कमी हो सकती है।

67.08% प्रतिभागी संगठन पर्यावरण क्षेत्र में काम कर रहे थे, लेकिन उनमें से केवल 44% के पास ही पर्यावरण नीति थी। इसके अतिरिक्त, 67.08% प्रतिभागी संगठनों ने पर्यावरण क्षेत्र में काम पर ध्यान केंद्रित किया, लेकिन उनमें से केवल 44% के पास ही पर्यावरण नीति थी। यह असमानता सदस्य संगठनों के भीतर समावेशिता की कमी को उजागर करती है।

हालांकि, यह अध्ययन प्रारंभिक है, व्यापक नहीं है और सुविधा के नमूने पर आधारित है, यह इस तर्क के सार पे किया गया है कि भारतीय सीएसओ में पर्यावरण से संबंधित क्षेत्रों की कमी है– चाहे वह निर्णय लेने में एक कारक के रूप में एकीकरण में हो या अपने आप में एक कारण के रूप में हो।एक समावेशी ढांचे की मांग करने वाले फंडर्स/डोनर्स/निवेशकों के समकालीन सेट के साथ, जिसे सीएसओ अपने निवेशकों के साथ बनाने का लक्ष्य रखते हैं।

अकेले कुछ नहीं हो सकता, बड़े पैमाने पर समाज की बेहतरी और सभी कार्यों के लिए एक गहरा प्रभाव पैदा करने के लिए विभिन्न संस्थाओं को एक साथ आने की आवश्यकता होती है। नागरिक समाज संगठनों के लिए, सरकार में बदलाव, COVID 19 महामारी, धन का अनियमित प्रवाह आदि जैसे कारक बाधा के रूप में कार्य करते हैंय एकीकृत कार्रवाई की आवश्यकता और महत्व को पहचानने में विभिन्न विषयगत क्षेत्रों को आपस में जोड़ने से, समाज खुद को मजबूत कर सकता है और यह नीति निर्माताओं पर प्रभाव डालता है और इस तरह अपने लिए नए मार्ग बनाने के लिए बाहर निकलता है।

अध्याय 4
क्यों नागरिक समाज संगठनों द्वारा पर्यावरण को कारक और कारण दोनों के रूप में आंकना चाहिए?

जलवायु चरम सीमाओं के मामले में भारत सातवां सबसे कमजोर देश है।''

जर्मनवॉच[19]

जलवायु परिवर्तन दुनिया भर के देशों को व्यापक रूप से प्रभावित करता है, विशेष रूप से वंचितों को विशेष रूप से उनके पहले से बिगड़ते आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक संकटों पर बल देता है। स्थानीय स्तर पर संगठन पर्यावरण के मुद्दों को समाज के विकास और परिवर्तन में एकीकृत करने के लिए महत्वपूर्ण हैंय एक कारण और कारक दोनों के रूप में पर्यावरण को मुख्यधारा में लाना परस्पर जुड़े संगठनों के बीच उत्प्रेरक कार्रवाई पर निर्भर करता है। पर्यावरण का मुद्दा एक गतिशील मुद्दा है जिसके लिए निरंतर अनुकूलन और अपनाने की आवश्यकता होती है, मुख्य रूप से विकास क्षेत्र के साथ पर्यावरण के संबंधों के निरंतर मूल्यांकन के माध्यम से। दुर्भाग्य से, विकास के क्षेत्र से पर्यावरण के लगातार अलग होने के कारण, आम जनता सामाजिक परिवर्तन के इच्छित माप को प्राप्त करने में विफल रहती है।

स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक विकास के साथ पर्यावरण का अंतर्संबंध समुदायों और आजीविका के आधार के रूप में इसकी भूमिका से उपजा है। भारत जैसे देश के लिए, गहरी जड़ें जमा चुकी सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक असमानता के साथ–साथ धन और अवसरों के असमान नियंत्रण के अंतर्निहित मुद्दे को संबोधित किए बिना गरीबी में कमी और विकास की कमी की बुराई से लड़ना असंभव है। लोग पहले से ही इस तरह के नुकसान से त्रस्त हैं, जब जलवायु या पर्यावरणीय प्रतिकूलता का सामना करना पड़ता है, तो वे गरीबी में और भी डूब जाते हैं। जिसके बारे में बोलते हुए, कोविड19 महामारी भारत के विकास में बाधा डालने वाले पर्यावरण के साथ विकासात्मक मुद्दों की परस्पर जुड़ी प्रकृति को उजागर करने के लिए एक प्रमुख उदाहरण के रूप में खड़ा है; स्वास्थ्य क्षेत्र में निवेश की कमी के कारण, महामारी ने अस्पताल के बिस्तरों की दुर्गमता, ऑक्सीजन सिलेंडरों की कमी और प्रशिक्षित चिकित्सा पेशेवरों की अनुपलब्धता को आगे बढ़ाया, जिसके परिणामस्वरूप जीवन और आघात का अभूतपूर्व नुकसान हुआ।

सीईईडब्ल्यू (CEEW's) के अध्ययन[20] 'मैपिंग इंडियाज क्लाइमेट वल्नरेबिलिटी' के अनुसार, भारत जलवायु चरम सीमाओं के संबंध में सातवां सबसे कमजोर देश है और इसलिए अस्थिर जलवायु परिदृश्य से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए, हाइपर–लोकल रणनीतियाँ समय की आवश्यकता हैं। हाइपरलोकल रणनीतियाँ क्षेत्र–विशिष्ट जोखिमों की पहचान करती हैं और क्षेत्र–विशिष्ट नीतियों और कार्यक्रमों के साथ आती हैं जो सीएसओ को अनुकूलनीय समाधानों के साथ अपने लक्षित समुदायों की प्रभावी रूप से मदद करने में मदद कर सकती हैं।

---

19 मोहंती, अबिनाश और श्रेया वधावन। 2021. भारत की जलवायु संवेदनशीलता का मानचित्रण – एक जिला स्तरीय आकलन। नई दिल्लीः ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिषद।

20 मोहंती, अबिनाश और श्रेया वधावन। 2021. भारत की जलवायु संवेदनशीलता का मानचित्रण – एक जिला स्तरीय आकलन। नई दिल्लीः ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिषद।

अध्याय 2 के अनुसार थ्योरी–प्रैक्टिस अंतर स्पष्ट करता है कि कैसे भारत इस क्षेत्र की पर्यावरण ीय चिंताओं के हाशिए पर होने के कारण जमीनी स्तर पर एसडीजी को अपनी प्रणाली में अपनाने में विफल रहता है और यह आम लोगों के दिन–प्रतिदिन के जीवन को कैसे प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, असम जैसे बाढ़ प्रभावी क्षेत्र में, बड़े पैमाने पर मिट्टी के कटाव और तबाही से न केवल मानव जीवन का नुकसान होता है, बल्कि दैनिक आवागमन पर भी भारी प्रभाव पड़ता है। लोगों को तत्काल चिकित्सा सुविधा नहीं मिलने और बच्चों को घरों में बंद करने के कारण, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों पर भारी प्रभाव पड़ता है। पर्यावरण के साथ विभिन्न विषयगत मुद्दों के अंतर्संबंध को समझना और एक क्रॉस–सेक्टरल दृष्टिकोण अपनाने से सीएसओ को सक्रिय कार्रवाई शुरू करने और बदलते और चुनौतीपूर्ण समय में फिट होने में मदद मिलती है।

वाणी जैसे संगठन इस अंतर को भरने के लिए और एक मानक तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वयंसेवी संगठनों के एक शीर्ष निकाय के रूप में, पर्यावरण के प्रति वाणी की जवाबदेही और उसी क्षेत्र में इसके सक्रिय शासन ने अपने सदस्य संगठनों और सीएसओ को स्वच्छ, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रह की दिशा में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित किया है। 2014 से, वाणी सीएसओ जवाबदेही[21] पर वैश्विक मानक के विकास और प्रचार में शामिल दस परियोजना भागीदारों में से एक रही है। मानक को बढ़ावा देने वाली 12 प्रतिबद्धताओं में से एक 'स्वस्थ ग्रह' है, जो प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए जीवन का समर्थन करने की क्षमता को बढ़ाने की दिशा में काम करती है (प्रतिबद्धता 3)। प्रतिबद्धता वर्तमान में जीवन को बनाए रखने और समाज में गरीबी में सबसे ऊपर रहने वाले लोगों पर पर्यावरणीय गिरावट, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के नुकसान के असमान परिणामों को सक्रिय रूप से स्वीकार करके भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सुनिश्चित करने के मूल्यों को कायम रखती है। प्रतिबद्धता के तहत, सीएसओ को ऐसी रणनीतियों का विकास और कार्यान्वयन करना चाहिए जो पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा में सहायता करते हैं, इसकी अन्यता को खारिज करते हुए और इसे अपनी नीतियों और योजना में एकीकृत करते हैं। उपर्युक्त पहलों में उनकी सक्रिय भागीदारी के साथ, वाणी अक्सर ज्ञान के प्रसार के लिए अपने सोशल मीडिया हैंडल पर संलग्न रहती है। उदाहरण के लिए, विश्व पर्यावरण दिवस 2022 के अवसर पर, वाणी ने अपने सदस्यों और नागरिक समाज संगठनों से एक स्वस्थ ग्रह की दिशा में 'कार्रवाई के लिए तैयार' करने का आग्रह किया और सभी स्तरों पर अपने कार्यों को पर्यावरण की मुख्यधारा में अपनी सोच और कामकाज में शामिल करने का आग्रह किया। एक वीडियो[22] के साथ जो समान भागों में आकर्षक और सूचनात्मक था, वाणी ने बदलते समय के अनुकूल किया है और इसके परिण ाामस्वरूप जलवायु जागरूकता की दिशा में सामूहिक परिवर्तन को कम करने के लिए कार्रवाई के लिए तत्काल कॉल को बढ़ाने के लिए सूचना प्रसार के नए रूपों को अपनाया है।

वाणी की एक भूमिका सीएसओ के लिए एक संसाधन केंद्र की है। वाणी सीएसओ की सहायता करने और उन्हें शिक्षित करने के लिए साक्ष्य–आधारित शोध और अध्ययन[23] आयोजित करती है। ऐसा ही एक अध्ययन है 'स्वैच्छिक संगठनों के लिए समावेशी शासन अध्ययन रिपोर्ट'[24] जिसका उद्देश्य सीएसओ को बाहरी चुनौतियों से निपटने के लिए सक्रिय रूप से तैयार करते हुए उनकी आंतरिक संरचना को मजबूत करने में सहायता करना है। बदलते सामाजिक–राजनीतिक परिवेश में, सीएसओ को पारदर्शी होना चाहिए और जब भी उनके आंतरिक कामकाज की बात आती है, तो जहां भी आवश्यक हो, जवाबदेही लेनी चाहिए। अध्ययन का उद्देश्य सीएसओ को उनके कामकाज में 'समावेशी और अनुकूल' होने में सक्षम बनाना था और इस प्रकार अध्ययन रिपोर्ट एक नमूना पर्यावरण नीति भी प्रस्तुत करती है जिसे एक संगठन अपनी परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलित तौर पे अपना सकता है।

(वाणी की नमूना पर्यावरण नीति के लिए अनुलग्नक 1 देखें)

---

21 उपलब्धता https://www.csostandard.org/

22 उपलब्धता https://www.facebook.com/watch/?v=813066109658774

23 उपलब्धता https://www.vaniindia.org/resources/publications

24 उपलब्धता https://www.vaniindia.org/uploads/resources/Inclusive%20Governance%20Study%20Report.pdf

पर्यावरण नीति

पर्यावरण नीति एक संगठन की पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता की घोषणा है। यह नीति सभी मुख्य हितधारकों यथा संगठन के सभी कर्मचारी, प्रबंधन, भागीदार, शेयरधारकों, ग्राहकों और आपूर्तिकर्ताओं की पर्यावरण के प्रति दृष्टि को एकीकृत करने वाली होनी चाहिए। यह किसी संगठन के काम करने के पदचिन्हों में से सबसे पहला कदम है। एक पर्यावरण नीति, विकास, विस्तार और दीर्घकालिक लक्ष्यों के लिए दिये गये विशिष्ट विचारों के साथ दीर्घकालीन होनी चाहिए।जैसा कि नीति संगठन के विचारों और लक्ष्यों का प्रतिनिधित्व करेगी, इसलिए इसे वरिष्ठ प्रबंधन द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए।पर्यावरण नीति बनाते समय इसे संक्षिप्त और सरल रखें, और यथार्थवादी, प्राप्त करने योग्य, संगठन की गतिविधियों और प्रथाओं के लिए प्रासंगिक प्रतिबद्धताओं पर ध्यान केंद्रित करें।

संगठन की प्रतिबद्धताएं या सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

- प्रासंगिक पर्यावरणीय मुद्दों पर कर्मचारियों को शिक्षित करना।
- कचरा कम करना।
- हरित खरीद नीति स्थापित करना।
- एक पुनर्चक्रण सेवा प्रदाता की तलाश करना और यदि उपलब्ध हो, तो एक पुनर्चक्रण कार्यक्रम कार्यालय की स्थापना करना।
- पानी और ऊर्जा का उपयोग कम से कम करना।
- विभिन्न उपयुक्त प्रांतीय और संघीय पर्यावरण नियमों के साथ–साथ कर्मचारी सुरक्षा कानूनों का पालन करें।
- कर्मचारियों के आने–जाने, बैठकों और सम्मेलनों के लिए यात्रा करने में परिवहन के भार को कम करना।
- पर्यावरण के अनुकूल साफ–सफाई, शौचालयों और कार्यालय की आपूर्ति की तलाश करना।
- कार्यालय में उपयोग किए जाने वाले खतरनाक और जहरीले पदार्थों का उपयोग कम से कम करना।
- स्थानीय समुदाय के बीच पर्यावरणीय क्रिया– कलापों का समर्थन करना।

संगठन जिन नीतिगत आदर्शों को व्यवहार में लाने पर ध्यान केंद्रित करेगा।

कर्मचारियों का शिक्षण

कर्मचारियों को पर्यावरण नीति के बारे में शिक्षित करना। सभी कर्मचारियों और प्रबंधन को पर्यावरण नीति के प्रति प्रतिबद्ध रहने के लिए कहना। पर्यावरण नीति पर्यावरण के प्रति संगठन की प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए कर्मचारियों के मनोबल में सुधार करेगी।

मॉडल पर्यावरण नीति

संगठन हमारे मार्गदर्शक सिद्धांतों में से एक पर्यावरण संरक्षण को और मजबूत व्यापारिक प्रदर्शन को प्रमुख घटक के रूप में मान्यता देता है। संगठन हमारे कर्मचारियों के लिए एक सुरक्षित और स्वस्थ कार्यस्थल सुनिश्चित करने के तरीके से काम करेगा और पर्यावरण पर हमारे भार को कम करता है। हम प्रासंगिक संघीय, प्रांतीय और नगरपालिका के पर्यावरण विधान के अनुपालन में काम करेंगे और हम अपने सभी कार्यों में पर्यावरणीय सर्वोत्तम रीति नीति और प्रथाओं का उपयोग करने का प्रयास करेंगे। हम निम्नलिखित काम करेंगे:

- ➢ हमारे सभी निर्णय लेने में और सभी गतिविधियों में पर्यावरणीय चिंताओं और प्रभावों को समिलित करेंगे।
- ➢ हमारे कर्मचारियों के बीच पर्यावरण के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देंगे और उनको पर्यावरण की दृष्टि से और अधिक जिम्मेदार तरीके से काम करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
- ➢ हमारे कर्मचारियों को उन पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में प्रशिक्षित, शिक्षित और सूचित करेंगे जो उनके काम को प्रभावित कर सकते हैं।

- हम कार्यालय में पुनर्चक्रण कार्यक्रम शुरू करके कचरे को कम करेंगे, जिसमें पेपर, कार्डबोर्ड, पेय पदार्थों के डिब्बे, प्लास्टिक डिब्बे, और अन्य सामग्रियों का पुनर्चक्रण शामिल है, जो पुनर्चक्रण प्रदाता द्वारा स्वीकार किए जाते हैं।
- हम पर्यावरणीय तौर पर जिम्मेदार उत्पादों को खरीदेंगे जिनका चयन उच्च मानदंडों के आधार पर किया जाता है। जिनमें– विशाक्तता, स्थायित्व, पुनर्चक्रीकरण या पुनर्सज्जित सामग्री का उपयोग, न्यूनतम ऊर्जा औरध्या पानी की खपत, कम पैकेजिंग, और पुनर्चक्रीकरण, पुनर्भरण या इसके उपयोगी जीवन के अंत तक पुनर्सज्जित करने की क्षमता शामिल हैं।
- हमारी पूरी सुविधा में पानी और ऊर्जा सहित सभी संसाधनों के कुशल उपयोग को बढ़ावा देंगे।
- हम खतरनाक सामग्रियों के अनावश्यक उपयोग से बचाव और जब भी संभव हो अन्य विकल्पों की तलाश करेंगे।
- हम हमारे उपभोक्ताओं, ग्राहकों और जनता को नियमित रूप से अपने पर्यावरण कार्यक्रम के बारे में बताएंगे और उनका समर्थन पाने के लिए प्रोत्साहन करेंगे।
- हम हमारी वर्तमान और भविष्य की गतिविधियों की योजना बनाने में पर्यावरण नीति का समय–समय पर समीक्षा करके हमारे पर्यावरण प्रदर्शन में लगातार सुधार करने का प्रयास करेंगे।
- कचरे और खतरनाक कचरे जैसी सामग्रियों के पुनर्चक्रीकरण कार्यक्रमों औरध्या सुरक्षित निपटान के विकल्पों की जांच और प्रक्रिया आरंभ करेंगे।

अध्यक्ष ___________

दिनांक___________

सोसायटी फॉर डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स[25] जैसे नागरिक समाज संगठन इस क्षेत्र में अग्रणी हैं, तकनीकी नवाचारों का समर्थन करके जो हरित चेतना के मूल्यों पर बने हैं, यह दुनिया का पहला सामाजिक उद्यम है जो सतत विकास के लिए समर्पित है जो जीवन को सामाजिक, पर्यावरण और आर्थिक स्तर पर बदलाव लेने वाले परिणाम देने का प्रयास करता है। । संगठन का उद्देश्य पर्यावरण और विकास के अक्सर अलग–अलग क्षेत्रों को सामाजिक परिवर्तन के खाके के रूप में लोगों और पर्यावरण के लिए अधिक तालमेल में लाना है। उन गांवों में जहां महिलाएं प्राकृतिक संसाधनों और कृषि पर काफी हद तक निर्भर हैं, उन्हें पर्यावरण का खामियाजा भुगतना पड़ता है। उदाहरण के लिए, राजस्थान जैसे सूखाग्रस्त क्षेत्रों में महिलाओं को पीने का पानी लाने के लिए मीलों पैदल चलना पड़ता है। यह न केवल उनके समय की बर्बादी है बल्कि शिक्षा और रोजगार पाने के उनके अवसर को भी बर्बाद कर रहा है। जीरो टू मिनिमम स्टेटस देकर वे गरीबी के जाल में फंस गए हैं। महिलाओं के मुद्दों और भारत में महिलाओं के लिए अवसरों की उपलब्धता की कमी जैसे अन्य विषयों के साथ पर्यावरणीय संकटों के अंतर्संबंध को स्वीकार करते हुए, डीए की तारा अक्षर् की अवधारणा महिलाओं को पढ़ना, लिखना और सरल अंकगणित करना सिखाती है। इसका उद्देश्य महिलाओं की क्षमता का निर्माण करना और उद्यम विकास के मूल्यों को विकसित करने के लिए उनके कौशल का विकास करना और उन्हें अपने जीवन को अर्थ और गरिमा प्रदान करने में मदद करना है।

जमीनी स्तर पर, माउंट वैली डेवलपमेंट एसोसिएशन (एमवीडीए)[26] जैसे संगठन एक ऐसा नागरिक समाज संगठन है जो उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल क्षेत्र में रहने वाले समुदायों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने की दिशा में काम करता है। सर्वोदय आंदोलन के विचार से प्रेरित होकर, जो 'सभी के लिए प्रगति' की वकालत करता है, संगठन ने खराब आर्थिक विकास और स्थानीय जिलों के विकास की स्थिर स्थिति में तेजी लाने के प्रयास के रूप में शुरुआत की। पर्यावरण की स्थिति के साथ समुदायों की भलाई के परस्पर संबंध की पहचान करते हुए, इस संगठन के कार्यक्रमों ने स्थानीय समुदायों के समग्र टिकाऊ विकास के उद्देश्य से एक क्रॉस सेक्टोरल दृष्टिकोण का पालन किया। समग्र जीवन के सिद्धांतों को बढ़ावा देते हुए, संगठन का लक्ष्य अपने कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है जो प्रारंभिक बाल देखभाल, बालिका शिक्षा, कृषि संरक्षण और कृषि जैव विविधता के उचित उपयोग को बढ़ावा देते हैं।

यह सुनिश्चित करना कि उनके लक्षित समूहों को विभिन्न सरकारी योजनाओं से उचित सहायता मिले, संगठन का मिशन स्थायी आजीविका पहलों के माध्यम से स्थानीय समुदायों को गरीबी उन्मूलन की दिशा में समर्थन में परिवर्तन का उत्प्रेरक बनना है। मौजूदा आजीविका विकल्पों का उपयोग करने के महत्व पर जोर देते हुए, एमवीडीए की आजीविका और कृषि कार्यक्रम स्थानीय लोगों के विकास और क्षमता निर्माण में सहायता करने के लिए जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय क्षति और प्राकृतिक आपदा प्रबंधन जैसे मुद्दों को कम करते हैं। एमवीडीए का 'होलिस्टिक रूरल इनिशिएटिव फॉर डेवलपमेंट एक्शन एंड यील्ड' (हृदय) उनके कार्यक्रमों में से एक है, जो न केवल आजीविका वृद्धि (शिक्षा, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, बुनियादी ढांचे के विकास आदि के माध्यम से) के माध्यम से समग्र विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों से संकट के प्रवास को रोकना भी है। कृषि को स्थायी आजीविका के विकल्प के रूप में स्थापित करके अवसरों की कमी के कारण शहरी क्षेत्र की तरफ होने वाले स्थानांतर को रोकना है। इस तरह के रोजगार कार्यक्रम के अवसरों के माध्यम से समाज के सभी वर्गों को सशक्त बनाकर समुदाय के सामाजिक विकास में योगदान करते हैं। रोजगार, प्रकृति और लैंगिक भेदभाव जैसे मुद्दों की परस्पर संबद्ध

---

25 उपलब्धता https://www.devalt.org/

26 उपलब्धता http://mvda.org.in/

ता को पूरा करते हुए, एमवीडीए का हृदय का अंतिम लक्ष्य जलवायु परिवर्तन के प्रति स्थानीय लचीलापन बनाकर, लैंगिक समानता को बढ़ावा देकर और पर्यावरण के अनुकूल जैविक खेती की वकालत करके व्यक्तियों की आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ाना है।

जैसा कि जलवायु आपातकाल दुनिया पर भारी प्रभाव डाल रहा है, सीएसओ को न केवल अपने पारिस्थितिक पदचिह्न को कम करने की इच्छा रखनी चाहिए, बल्कि एक मानवीय प्रभाव भी पैदा करना चाहिए जो अंततः एक स्वस्थ, खुशहाल भविष्य की दिशा में काम करने वाले बड़े पैमाने पर आंदोलन के रूप में विकसित हो। गूंज[27] जैसे संगठनों का उद्देश्य असमानता की खाई को भरना और समानता का निर्माण करना है। और विकास को गति देने के लिए उपकरणों के रूप में कम उपयोग किए गए शहरी संसाधनों का उपयोग करके शहरों और गांवों के बीच सामान संबंध का निर्माण करना है। गूंज वाणी का एक सदस्य संगठन है, और उनका काम मानवीय मूल्यों को दर्शाता है, जो स्थिरता की दिशा में आंदोलन का प्रतीक है। गूंज आपदा राहत और पुनर्वास, पानी की उपलब्धि, स्वच्छता, स्वास्थ्य, आजीविका, शिक्षा और पर्यावरण से संबंधित क्षेत्रों पर काम करती है। 'परिपत्र अर्थव्यवस्था' के प्रवर्तक के रूप में गूंज प्रत्येक सामग्री का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करता हैय ट्रैश–आधारित अर्थव्यवस्था के समर्थक के रूप में, यह एक मूल्यवान संसाधन बनाने के लिए बड़ी मात्रा में पुरानी पुनः प्रयोज्य सामग्री का उपयोग करता है। गूंज के मूल्य हमें सिखाते हैं कि केवल नवाचार के रास्ते बनाकर और चीजों को बड़े या छोटे के रूप में न देखकर जमीनी स्तर पर भी स्थिरता हासिल की जा सकती है। उनका काम दर्शाता है कि व्यक्तिगत स्तर पर छोटी–छोटी कार्रवाइयाँ भी बड़े पैमाने पर समुदाय को प्रभावित करती हैं और अंततः पूरे देश को प्रभावित करती हैं।

27 उपलब्धता https://goonj.org/

सिफारिश

नागरिक समाज संगठन राष्ट्र की आवाज हैं और यह तभी सही है जब संगठन के प्रत्येक किरायेदार के माध्यम से आवाज को बढ़ाया जाए। चूंकि अलगाव में कुछ भी मौजूद नहीं है, पर्यावरण को मुख्यधारा में लाने के लिए संगठन के प्रयास अपने भीतर से शुरू होने चाहिए। क्रांति रातोंरात नहीं होती है, इसलिए, एक संगठन के लिए प्रभाव पैदा करने और पर्यावरण जागरूकता के महत्व के बारे में दूसरों को शिक्षित करने के लिए, उसे उसी दिशा में काम करने वाली प्रथाओं और नीतियों को भी अपनाना चाहिए।

संगठन के भीतर पर्यावरण को मुख्यधारा में लाने के तीन तरीके हैं। सबसे पहले, दान द्वारा और न्यूनतम प्रतिबद्धता स्तरों जैसे कि पेपरलेस जाना, हाइब्रिड वर्क मोड को अपनाना, कार्यालय परिसर में प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाना आदि। 3 रुपये– कम, पुनः उपयोग और रीसायकल को ध्यान में रखते हुए, सीएसओ अपने संगठन के दैनिक कामकाज को तदनुसार ढाल सकते हैं। दूसरे, पर्यावरण नीतियों को अपनाकर और समावेशी मानव संसाधन प्रथाओं को लागू करके, संगठन आधिकारिक कामकाज के भीतर पर्यावरण जागरूकता में सहायता कर सकते हैं। इन प्रथाओं में पुनश्चर्या प्रशिक्षण, कर्मचारियों द्वारा नीति पर हस्ताक्षर सुनिश्चित करना, पूरे संगठन में पर्यावरण नीति के कार्यान्वयन की सुविधा प्रदान करना और आवश्यकता पड़ने पर नीति की समीक्षा और अद्यतन करना शामिल है। और तीसरा, संसाधन आवंटन, बजट योजना और संसाध ान आवंटन के दौरान पर्यावरण के प्रति जागरूक व्यवहार अपनाकर।

एक और सही तरीका अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पर्यावरण नीति को अपनाना है। पर्यावरण नीति को संगठन के सदस्यों के लिए आदर्श रूप से संगठन के जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संबंधी प्रथाओं, मानकों और सिद्धांतों की रूपरेखा में तैयार करनी चाहिए। संगठन को पर्यावरण पर पड़ने वाले किसी भी नकारात्मक प्रभाव को कम करने और कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के लिए नीति को अपने काम, नीतियों, रणनीतियों और योजना में पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन के विचारों को प्रतिबद्ध और एकीकृत करना चाहिए। पर्यावरण नीति संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के सिद्धांतों और जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय गिरावट के खिलाफ एकीकृत कार्रवाई की आवश्यकता के अनुरूप होनी चाहिए, जो विश्व स्तर पर अर्थव्यवस्थाओं में आमद, मानव जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव और बेहतर भविष्य के अवसरों के नुकसान के कारण सभी को प्रभावित करती है।

पर्यावरणीय निरंतरता नीति विकास वैकल्पिक समूह

विकास वैकल्पिक समूह में हम सतत विकास और अपने पर्यावरणीय प्रदर्शन में निरंतर सुधार के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारे दृष्टिकोण और जनादेश के अनुरूप, बड़े पैमाने पर सतत् आजीविका बनाने के लिए हम निम्नलिखित प्रयास करेंगेः

हमारे अनुसंधान, प्रचालन और समुदायिक/बहु–हितधारक बाध्यकारी प्रक्रियाओं में निरंतरता के सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को शामिल करेंगे।

- हमारी परियोजनाओं, कार्यक्रमों और संचालनों में जहां कहीं भी संभव होगा, पर्यावरण–कुशल और स्थाई डिजाइन सिद्धांतों को लागू करने और संसाधन के प्रबंधन के लिए कम कार्बनमार्ग अपनाने में नेतृत्व का प्रदर्शन करेंगे।
- हम डीए समूह की संस्थाओं में और व्यापक समुदाय जिसमें हम काम करते हैं और जिसे प्रभावित कर सकते हैं में अंतर्निहित पर्यावरणीय स्थिरता को अंतर्निहित और प्रसारित करेंगे।
- पर्यावरणीय स्थिरता से संबंधित निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सभी स्तरों पर कर्मचारियों की साझा जिम्मेदारी और उनके पारदर्शी जुड़ाव को सुनिश्चित करेंगे।
- हम कर्मचारियों और व्यापक समुदाय को प्रशिक्षण और सामान्य शिक्षा के माध्यम से जागरूक करने और स्थिरता के लिए कार्रवाई को प्रोत्साहित करने का काम करेंगे।
- सहमति के आधार पर लक्ष्यों और संकेतकों का उपयोग करते हुए, नियमित प्रदर्शन की निगरानी और मूल्यांकन करेंगे।

यह नीति डीए समूह के सभी कर्मचारियों और डीए समूह के संचालन में सभी स्थानों पर संगठनात्मक गतिविधियों में लगे सलाहकारों पर लागू होती है।

हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हम सभी स्थानीय और राष्ट्रीय पर्यावरण कानूनों और विनियमों का पालन करेंगे, हमारी पर्यावरण नीति सभी इच्छुक पार्टियों को संसूचित की जाएगी और जनता के लिए उपलब्ध कराई जाएगी।

स्थानः नई दिल्ली
दिनांकः 08–08–2019

डा. अरूण कुमार
अध्यक्ष

हमारी पर्यावरण–चेतना के प्रति जागरूक होना एक प्रभाव पैदा करने की दिशा में सही कदम होगा, इसलिए, पर्यावरण नीति को अपनाने के अलावा, संगठन को पहले से ही उपलब्ध सीमित संसाधनों जैसे पानी, कागज, बिजली आदि के प्रति सचेत रहना चाहिए। परिवर्तन घर पर होता हैय इसलिए जहां भी संभव हो हाइब्रिड वर्किंग मॉडल को अपनाना और महामारी के बाद के समय को अपनाना जरूरी है। अपने काम से जुड़े ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को सक्रिय रूप से कम करने के लिए, संगठनों को व्यक्तिगत परिवहन से यात्रा करने में कटौती करनी चाहिए और जब

भी संभव हो सार्वजनिक परिवहन का विकल्प चुनना चाहिए। पर्यावरण के प्रति जागरूक प्रथाओं के कार्यान्वयन के लिए, संगठनों को अपने कर्मचारियों को जागरूकता बढ़ाने और उन्हें ध्यान में रखने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। समय–समय पर पर्यावरण स्थिरता के प्रासंगिक क्षेत्रों पर कार्यशालाएं, वेबिनार और प्रशिक्षण आयोजित करना संगठन के कामकाज में पर्यावरण को मुख्यधारा में लाने का एक शानदार तरीका है।

किसी विशेष क्षेत्र को प्रभावित करने वाले विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों की परस्पर संबद्धता और मुद्दे की व्यक्तिपरकता को देखते हुए, सीएसओ को अति स्थानीय रणनीतियों को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। यह स्थानीय व्यवसायों से सोर्सिंग, स्थानीय गैर सरकारी संगठनों को वित्त पोषण और स्थानीय स्वयं सहायता समूहों को दान करने जितना आसान हो सकता है। किसी भी निर्णय लेने से पहले एक मजबूत जरूरतों का आंकलन किया जाना चाहिए ताकि किसी विशेष क्षेत्र के विशिष्ट मुद्दों को प्रभावी ढंग से निपटाया जा सके। स्थायी परिवर्तन लाने के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि सीएसओ स्तरों के प्रभाव पर विचार करें और अपने कार्यों को तदनुसार ढालें। व्यक्तिगत स्तर पर संगठन के सदस्य पर्यावरण के प्रति जागरूक व्यवहार को ध्यान में रखकर कार्य कर सकते हैं। संगठनात्मक स्तर पर, नीतियों, कार्यक्रमों और बजट को न केवल व्यक्ति और संगठन, बल्कि बड़े पैमाने पर समुदाय को प्रभावित करने वाले कारक और कारण दोनों को ध्यान में रखते हुए किया जा सकता है।

"वयस्क कहते रहते हैं: "हम युवाओं को उन्हें आशा देने के लिए ऋणी हैं।" लेकिन मुझे आपकी आशा नहीं चाहिए। मैं नहीं चाहता कि आप आशान्वित हों। मैं चाहता हूं कि आप घबराएं। मैं चाहता हूं कि आप उस डर को महसूस करें जो मैं हर दिन महसूस करता हूं। और फिर मैं चाहता हूं कि आप अभिनय करें। मैं चाहता हूं कि आप वैसे ही कार्य करें जैसे आप किसी संकट में करेंगे। मैं चाहता हूं कि आप ऐसा व्यवहार करें जैसे घर में आग लगी हो। क्योंकि लगी हुइ है।"[28]

ग्रेटा थुनबर्ग

जब वर्तमान की जिम्मेदारी लेते हुए आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर दुनिया बना रहें हो तब हमेशा उस बड़े अच्छे के प्रति सचेत रहना चाहिए जिसके लिए वे काम कर रहे हैं। भारत अपने नेताओं द्वारा इसके लिए कल्पना की गई क्षमता को पूरा करने से बहुत दूर है, आर्थिक विकास की तेज गति की दौड़ में किसी को भी इसके कारण होने वाले पर्यावरणीय विनाश को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। महामारी समाज के निचले पायदान तक पहुँचने और कठिन समय में उनकी मदद करने की भारत की अपर्याप्तता पर प्रकाश डालती हैय अनुकूलनीय समाधान, डेटा संग्रह और जागरूकता निर्माण के क्षेत्रों में सक्रिय कार्रवाई सरकार के साथ–साथ सीएसओ की जिम्मेदारी होनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी पीछे न छूटे। वैश्विक राजनीतिक संघर्षों के कारण लगातार बदलते आर्थिक परिदृश्य और अस्थिरता के साथ, बुनियादी आवश्यकताओं की मांग और आपूर्ति श्रृंखला में धांधली होना लाजमी है। विभिन्न लक्षित समूहों के साथ काम करने वाले सीएसओ को अपनी कमियों और मजबूत बिंदुओं का आंकलन करना चाहिए और नौकरी के अवसर इस तरह से बनाना चाहिए कि हर कोई दूसरों के सामाजिक विकास के अवसर पैदा करने के साथ–साथ खुद की रक्षा करने में सक्षम हो।

---

28 ग्रेटा थुनबर्ग, 25 जनवरी, 2019 को स्विट्जरलैंड के दावोस में विश्व आर्थिक मंच में।

वाणी के बारे में

एक मंच के रूप में, वाणी स्वैच्छिकवाद को बढ़ावा देती है और स्वैच्छिक कार्रवाई के लिए जगह बनाती है। एक नेटवर्क के रूप में, यह देश में स्वैच्छिक कार्रवाई के वास्तविक राष्ट्रीय एजेंडे के निर्माण के लिए सामान्य क्षेत्रीय मुद्दों और चिंताओं के अभिसरण को लाने का प्रयास करता है। यह स्वैच्छिक क्षेत्र के विभिन्न प्रयासों और पहलों के लिंकेज को भी सुगम बनाता है।

VANI
Celebrating 30 Years
VOICE OF THE VOLUNTARY SECTOR

वॉलंटरी एक्शन नेटवर्क इंडिया (वाणी)
वाणी हाउस, 7, पीएसपी पॉकेट,
सेक्टर –8, द्वारका, नई दिल्ली 110 077
फोनः 91– 11– 4914 8610, 4039 1661, 4039 1663
ई–मेलः info@vaniindia.org
वेबसाइटः www.vaniindia.org